ग्रा.सा. ॐस्वस्तिश्रीगुरुरामानुजायनमः अथमंगलाचरण कुंडलीया गुरूपदगणपद्द
१ रीपदवसुविचारतएक वसुविचारतएकअनेकनेकहंनाही वाक्यविलासउदोत
सीलसमताउरमाही सदासुमतिप्रकासमा परमार्थपाऊ करोअनुग्रहसायकदु
दकग्रंथवनाऊ विघनहरनमंगलकरणतोसद्गुरअनेक रघुवरवंदनविविधकीरि
वसुविचारतएक १ छपय गुरूसंतनहरिसीसअर्पिचरननधेधारू आपासर्वस
पायसकलतिनऊपरवारू करोअनुग्रहसायस्वच्छदमता हीजेसाई परमार्थकोभे
दसभेलौरहेनकोई दूषणभेदभूषणकराअनमोदि निजदास रघुवरततविवेक
कासंसारहेनपास २ सोरठा सारदशिवसिरनायरामचरनउरधारिके होइयमो
हिसहायकहुंज्ञानसागरअमित १ असेपरमअगाधयाहकिपाऊछुद्रमति मनमे
परमहुलासकरनरोसानामहरि ४ सुगमसकविधसायकरद्वकृपासमसज्जे दे त
उविपर्जयघोषक्षदकवितगुनज्ञानको चोपई अथअधिकारी अभिअंतरउपजेवा
नेरा परमउलासज्ञानघनचेरा सीतलअचीचितअनुरागी ज्ञानविचारविरत
सुनभागी ६ सतसमागमपरमउछाही गुरूनकरघुजुक्तिउमाही निसदीसम १

ज्ञा॰ सा॰ संसारी सुखधाम १६ कर्म सहत पुनि रहित है सहित कर्म को जीव संसारी तातें भयो र
२ हित भयो सोई सीव १७ जीव ईश्वर है जगत महि प्रगट कहे सम कोय ब्रह्म दृष्टि विवेक बिन अं
तर दृष्टि न होय १८ अज्ञानी चेतन्य महि विलास वक कहे जीव है सु उपाधि भेद ज्ञानी कहे चैतन्य अं
है सो स १९ उपाधि भेद तें भेद सो लघु दीर्घ मुख भास जुह प्रतिबिंब दर्पण महि मुख चेतन्य प्रका
स २० माया दर्पण सम भई अविद्या च तु सम जोय चेतन्य मुख सम एक जो भेद भास महि
होय २१ माया चाविद्या चास्वयमेव भवती तिश्रुते जीव ईश्वर है भास है माया अविद्या भेद
भेद भास के बाधतें चेतन एक कहि वेद २२ एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मेति श्रुतेः एक अनंत अ
पार है पूरण शुध सम रूप ब्रह्म कह्यो सो आतमा रघोनजननीउ६ २३ इति सिद्धांत प्रश्न न
नु माया मा सन जीव शोक रोम श्रुते मा माज जननी कहत हे वेद वचन करि सोय सुतो सक्ति
पुनि कहितु है ताकी का गति होय २४ उत्र देवात्म शक्तिं स्वगुणैर्निगूढां इति श्रुतेः सक्ति कहै
ईश्वरी महि पुनि माता न ई जान गर्भ मा जसो भास है पिता सो पुत्र बखान २५ पिता सु जा को भा
स है जा मे भास सम आत भास भयो सो पुत्र तिह त्रिया मात यह बात २६ इति श्री रघुवर दास २
न का थितं ज्ञान सागर जीव ईश्वर वर्ननो नाम प्रथमो प्रसंगः १ शिष्य वचन भारत रहित
भयो सो सीव सदा निरंतर गाइये कर्म सहित कहो जीव तें गुरु मोहिं समझाइये १ गुरु वच॰

चित्तश्रमानी। प्रमार्थ चाहत अघहानी। ७ दोहा सो अधिकारी ग्रंथ को लहै तत्व अति
प्रास श्रवन मनन निदिध्यास करसुतें ज्ञानमय पास ८ कवित्त जु किजित अंत धीर नि
ज्ञान हेम प्रेम सीर हेत हद मेटपी रक्ष मेधाम राम है गुरु वचन ना यसों सभेद ज्ञान मजा यकी व
सुरा ज्ञान मेट मोचु औरन हो काम है जीव ईस भेद जाम वाचाल हाल नपाय चित्त नंदरूप
प्राय सो हंसो समानि है मंगल सरूप पाय काल कर्म भ्रम जा य व्रह्म पेधाम में जपाय रघुवर प्र
वानहै ९ दोहा रवि गुरु देस मतुल्य है तम अज्ञान करे दूर जगउर में प्रकास करि वद
नकं निजसूर १० सम दम आदि साधन सकल वैराग विवेक विचार अंतकरण यो शुद्ध
त्त करि तव मंग मुष सार ११ प्रश्न सम कहीये सो कोन है दम कहीये का नाय वैराग ताय
पुन कोन विध विवेक कहो समझाय १२ उत्र अरिल निरह वे कार चित थिर करि है समक
यके एक व्रह्म सम जानि है सम भाइके नियह इंद्री सर्व इहै दम कीजीये परिहरि आगे
कहूं वैराग जुगति जग जीजिये १३ पुनि विषयन को त्याग वासन नहीं होवई यह छिन छि
प वैराग सहज जई जो वई सारासार विचार सदा उर धारीये परिहरि है विवेक निरधार।
और सम टारीये १४ दोहा अब अग वरनन करूं जीव ईस को भेद सो निहचे उर धारी
ये सहज मिटे जग षेद १५ जीव अल्प चेतन्य महि कहीये है है नाम सर्वज्ञाता अल्पज्ञ पुनि

ज्ञा॰मा॰ परिहांकर्मकलंकनभार अनिंद्राजोपरे २२ दोहा अर्जुनकै इंज्ञानहीकृष्णवचनप्रवा
२ ण जुध करे तेहोषनहि प्रइं ज्ञायहजान २३ स्वइज्ञाराज्ञाजनकैहैपुत्रकलित्रधनधाम
सत्रुमित्रसुखदुखसमैप्राप्तिपरणाकाम २४ और ल प्रारब्धकोभेदनलैयहजानिये रा
जभोगसमतुल्यमराघोंजानिये ब्रह्मज्ञानउरआनसमैयेभ्रमरे परिहांसदामुक्तिपदरूप
माननिहकर्मरे २५ दोहा ब्रह्मज्ञानअंतरभयोजकर्मभर्मसबनास भोगभोगतानहीं [illegible] तव
आत्मसुतहप्रकाश २६ चौपई यों ज्ञानीसवमिथ्यामानै भोगभोगतानहींकछुठानै सन्म
3 मानअज्ञानीवरतै मानअज्ञानअंतरयोसरतै २७ भोगभोगताहैचिदाभास विष्वतेजसप्रा
ज्ञआभास प्रारब्धकर्मयेकहोये क्रियमाणकर्मअवलहोये २८ हेरआदिसुरजवलो अंत
नितनैमितकर्मवरतंत नित्यकर्मजेकरीयेएह संध्यावंदनवर्णाश्रमगेह २९ नैमितसंस्का
रपुत्रजनमादि प्रायश्चितकर्मव्रतचंद्रादि जग्यादिकजेकाम्यककर्म जी [illegible] मरणहिंसादिकप
र्म २० अतीतब्राह्मणगोहत्यपाहोय निषिधकर्मयेकहियेसोय यहप्रकारकेकर्मवषाने
त्रिगुणमयतेसबवषाने २१ दोहा औरउपासनाकर्महैक्रियमाणसबहोय समजविचा
रहिरदैगहोसंसारहैनकोय २२ सोरठा सिष्यवचन उपासनाकर्मकंहोयसेवकसेवा २
सनबधसो हरिमिलनिरमैहोयकर्मकलंकनपाइये २३ श्रीगुरुबचन शरीरवाङ्मनो॰

चौपई तीनप्रकारकर्मश्रबवरन्न संचितप्रथमदूजेक्रियेमिरन्न तीजेपरारब्धसमझ
ऊो भिन्नभिन्नसकलकहगाऊं २ प्रथमसंचितकर्मसरूप परलोकान्तभयेश्रनुरूप
पिंडब्रह्मंडकछुनहीहोय श्रपनेकारणरूपसमोय ३ श्रज्ञानसंचितकर्मनमेमिलो क
र्मसहितईश्वरसंमिलो तिनकर्मनकसंचितकहीय श्रवप्रारब्धमरपुनिलहिये ४ ई
श्वरप्रलयमाऊसर्वज्ञ तहांईजीवरहोश्रल्पज्ञ श्रपनीश्रज्ञानताकोजाने ईश्वरसर्वज्ञ
तानापहिचाने ५ श्रपनीसर्वज्ञताईश्वरजाने जीवश्रल्पतासहजेश्रवाने जीवकर्मफल
दाताहोय प्रपंचकर्मजीवकेकोय ६ फलदेवेकंब्रह्मंडरच्या जीवकर्मसंगदेहासच्या श्रप
नीश्रपनीजेजेरात जिनकर्मनसोंथीप्रतीति ७ तिनकर्मनसंगसुखदुखलहै परारब्धक
र्मतेप्रापतिरहे श्रस्थलभोगश्रावाक्षिकाने सूक्ष्मभोगस्वप्नपहिचाने ८ श्रानंदभोगश्रवि
द्यामईजाग्रतसुपनसुषोपतिभई तीनप्रकारप्रारब्धकेभोग रहताजनिरूपपारब्धसंजोग
९ दोहा सिष्यवचनप्रारब्धकोभेदसुनिमोमनिभयोसंदेह तीनप्रकारतिनभेदसोनिद
र्मैकहीयेयह १० चौपई श्रातिईछीसोकहसमझावोप्रश्नताकोभेदबतावो सबइछाकेस
मोहाय कोविधकोभेश्रापतिमोय ११ श्रारिल गुरुवचन जानवलकसुबदेवश्रोरजद
भरथहेहरिचरननश्रनुरागसदाश्रनुरकरे सुखदुखपनतननोगसर्वथाहोयरे

ज्ञा॰सा॰ कर्मविधान मो हसा धनाप्रथमजान ३५ मध्यमसतसोरजमिलरह्यो सुगसाधनायफल
६ इहकह्यो फलनस्वरतातेतमहोई मलिनसतोगुनकहीयेसोई ३६ सुषसतगुनउत्त
मकसावे फलअभिलाषरजोगुनपावे नस्वरदुषसुषमोतमरूप तातेजीवपरेभवकू
प ३७ एकरजोगुनतीनप्रकारा भिंनभिंनतेकरूंविचारा सुषइछासोसतसमिले म
ध्यमलोभरजोगुनरले ३८ हिंसादिकतामरजमंद तातमकहीयेलीन्यासंद सतसमि
लतमहिंसाकरे फिरपछतावेतिउकेदुरे ३९ रजसमिलतमहिंसाकर्म हर्षसहितठा
५ नेलपर्म सुधतमहिंसाधर्ममाने हिंसामेरहिवहुसोठाने ४० सुरनरनागमिश्रितसबक
हु प्रकृतीकारयुक्तीतालहै च्यारषानकेजंतमधारी प्रकृतिभिंनभिंनविस्तारी ४१ स्वेतज
अडंजरायुजहोई उदभिजषानचतुर्थसोई स्वरषानकावहुविस्तारा तारामंडलधातअ
पारा ४२ मंडलकेजीवअनेक अनमाऊठौरादिकतेक अजगेवीउपजेबहुतेरे इकीस
७ लाषसमिश्रीतहेरे जेरजनरपसवादिकजेत इकीसलाषचोपदादिकतेते अंडजषानहेहस
…र कतमारूडनागादिकलूर ४४ इकीसलाषचूडजविसार आगेउदभिजवि… प्र
कारा अंकरमउपजेबहुजाती अनचहनवलादिकजाती ४५ तृणअनकहुछोदि
…षु इकीसलाषकहनुजअनुरुप त्रिगुणमयतेसवहीकहीये च्यारषानतेभिंनभिंन ४
तहीये ४६ दोहा वेदोलाकउरमांडमेजोनी अनेकप्रकार कर्मवासनाजीवसंगभ्रमतवार

निर्णतइतिगीता चौपई कायवचनऔरमनकरकरीये कर्मसंज्ञासबहीकीधरीये पुरुष
साध्यसोकर्मकहाई वसुसाध्यनामहिनसोकाई २४ नयेकर्मक्रियमाणकहावे प्रारब्धतेभो
गतनपावे संचितकर्मधारितनपीछे पक्वअपक्वमिलतेईछे २५ नरदेहदेहधरनावेजोई
प्रारब्धहोयपुनिवरतेसोई अनादिकालकोअज्ञजीव कर्मनमिटेनपावेपीव २६ सुनअसु
नामग्रहतजोकरे तीनवासनाअंतरधरे कर्मचक्रचुढवारमवार जीवजोनधरवेद्धप्रकार २७
स्वर्गनरकपातालहिजावे अनंतकोटिब्रह्मंडफिरआवे दुखसुखमिश्रतभोगवेभोग मुक्तिन
लहेनकुटेरोग २८ अनादिमायासुतोजीवइतिश्रुतिः अनादिमायासुतोअचेतन इहश्रुतिमो
लिहकरेविसेषन अज्ञाननीदनहीनासेकवहू जेतनअनेककरेजेतवहू २९ अजामाया
सायककहीजे जीवभीअजएकलहीजे अजाह्येकाइतिश्रुतिः यहश्रुतितेनेकोन्हप्रवाण
एकमायाएकजीवहिजाण ३० कारणअज्ञानताकेअभिप्राय जीवहीकसर्वतकहाय को
येअज्ञानअलपज्ञकहीजे नारतम्यतसोहलवलहीजे ३१ अनेकजीवताजीवहीहाय भोग
भोगतासहजेसोय पुन्यापुन्यमिश्रतजोकर्म त्रिविधकरताकर्मीयपरम ३२ ईश्वरहैताको
फलदाता लोकवेदमाबरतविख्याता सतपुन्यतमपापविसेष रजपुनमिश्रतकर्महीदेष
३३ सोऊ अंतसमतवप्राणमेहैमतगुणसुधप्रकास रजगुनकीहैकामनातमगुनमलिन
निवास ३४ चौपई त्रिगुणभेदवहुरमम कांऊं एकएककेतीनतनाऊं सुक्षमतागुन।

ज्ञा॰सा॰ मनलायमेहन्नमकर्मजाय अभैधामसहजपायब्रह्मरंगभीजीये पुन्यफलआयलायेजुराम
५ रणभेदभाष्योअभैज्ञानभानजाज्ञोरघुवरजीजिये ४ सोरठा जोगअंगनिप्रगदायनासंकि
लविषबासना जुरामरणभयजायपुनिरापिजन्मनसासना ५ निरभयधामसमायब्रह्मज्ञानं
दृष्टिचंडसा उपमाकहीनजायसतचितआनंदरूपहै ६ चौपई संक्षेपहुजुगतिकरिकेसमका
ऊं बिद्वजनहृतधारणागाऊं नेमनकरिवाह्जमलधोवे यमकरिकेहिंसादिकखोवे ७ आ
5 सनकरिकेदेहीसाधै प्राणायामकरिमनकूबाधै प्रत्याहारविषैहुतिगहै धारिधारणाअहि
गचितरहै ध्यानजुकरिएकागरहोई समाधिसमलबड़समयजोई जुगतिजुगतिकरयाविधरहै
समगुरुजंतरगतगहै ८ सिष्यबचन मैसतगुरुतुमरीसरनोइ अल्पबुधितनलखानजाई
आपावतयेकहसमझावो आठअंगतिनकहगावो १० दोहा गुरुवचन सिष्यपछ्यातेप्रीतिसो
अष्टअंगकीरीति सावधानह्वैचितदेसुणआवेप्रतीति ११ अरिल अष्टयमवरनन प्रथमजम
कीजुगतिसहाचितदीजिये पंचाभेदबखानसहन्नसुनिलीजिये आहिंसासत्यअस्तेयब्रह्मही।
चरजेहै परिहापरिग्रहहोनविचारसहीजमजुगतिहै १२ अथनेमवरनन नेमसुपंचप्रकारजु
गतिसमझायहू तपईश्वरप्रणिधानसंतोषसुनायहू सुचस्वाध्यायपुनपाठकरानितनेमही पं
रिहांइहेनेमविधधारिपंचविधयेमही १३ अथआसनवरनन दोहा तीजेअंगआसनकहूबहुवि ५
धतिनकेजान सिधसुखासनपद्मकाचतुरासीप्रधान १४ रेडीबांधेपावकीसीवणमधलगाय

मवार ४७ चौपई अज्ञाननिद्रा अति से करसोयो अनव्याप्यो निधरघरपुनिरोयो नरतनवा
ऊतकालकोइ पावै जनम अनेकनिसकामकमावै ४८ मोहवासना अंतरधारै रजतमको
प्रपंचनिवारै नितनेमित्यवर्णकेधर्म बहुविधठानेतिनकेकर्म ४९ तीनपदारथहेतनिवा
रै अर्थधर्मकाम अंतटारै मोक्षअर्थसत्वकोसेवै रजतमकोकहूनःवनलेवै ५० इन्है मात्तिको मो
क्षकोसाधन त्रितीयज्ञानमात्त आराधन विनाविचारज्ञाननहीहोय चितयकाग्रविनवि
चारनकोय ५१ एकाग्रतयोगविननाही इष्टउपासनानहोठहराही विनउपासनाज्ञाननआ
वै ज्ञानभयेविनमोक्षनपावै ५२ ताहा त्रिविधमोक्षसाधनकहेक्रमसेभक्तिअरज्ञान जुगति
जुगतितिनकोकरेतवनासेभ्रमअज्ञान ५३ इतिश्रीरयुवरदासनकथितज्ञानसागरेसत्यबोधक
मवर्णनोनामद्वितीयप्रसंगः २ चौपई सिष्यवचनप्रथमकर्मफिरनेमपायो सोमनमेनि
हचेठहरायो ताकीसंक्याररहीनकआन भिनभिनकरएकसोवषान १ बहुरिअष्टांगजोगकी
रीति अनुक्रमसहितसुनावोनीति भक्तिज्ञानफिरआगेकहीयो समेसनमेहेतकरहीयो २
दोहा गुरुवचन अष्टांगयोगवरननकर सुनिसिष्यपरमसुजान ताअंगनअबसकरनासे
भ्रमअज्ञान ३ कवित्त अष्टांगयोगअंगजेजनभिनभिनकैवषानयमनेमआसनसोप्राणाया
मकीजिये प्रत्याहारपांचेंमेसोधारणाहैषष्टमीध्यानधारसप्तमअष्टमसमाधिरसपीजीये
ऐसोजुगतिमनलायमनदमनकमैआयअभेधामसहजपायब्रह्मरंगभीजीये ऐसीजुगति

ज्ञा०सा० मुद्रहैमेंप्रशब्दकहोमैंकहा रघुवरअनहदनादयहदशप्रकारजोगीलह्यो २९ सोरठा प्राणायामप्र
६ भावअमरापुरजोगीलहै नासैसकलप्रमुनावपरमानंदसमायकै ३० अथप्रत्याहारवरननं चौपा
ई प्रत्याहारपंचमैकहीये चितविषैवासनारहीये श्रोत्रशब्दमयपरसतुचा नेत्ररूपरसनारसरु
चा ३१ नासागंधलगतअतिप्यारी पांचोविषैपंचनामिलधारी निराहारचितविषैविसारे अरुप
दार्थहेतनिवारे ३२ संजमरहैजुगतिअहार आसनअडगनैरनिरवार नासादृष्टकमैअंगजे।
सें प्रत्याहारधारियेऐसे ३३ अथधारणावरननं दोहा भेदधारिणाअबकहूं पंचतत्तकीरीति जुग
तिजुगतिकारकीजियेनिहचलकरकेचीत ३४ गीतकछंद अवनिचकोणल्कारसहितवसन्पी
तहीध्याइये फिरैमैंडलविधहीअकितमावअतिमेलाइये घटिकापचाहिप्राणगहिकैचितथिरम
नलीजिये अवनिकेगुणधारियाविधसिध्यनिहचैकीजिये ३५ अपत्त्वनारवकारजुगतेकयौके
सचंद्रसानई अकितकंठपारस्वकारघटिकापंचनिरोधई चितधारिकैयहोयनिहचलकालक
ष्टनव्यापुही वारिधारणायियाविधसदसुषहोनिवापही ३६ अग्नितत्वत्रिकोणरफजरापधराय
प्रकासही हृदगापदुतितत्त्वमध्यतसारुहृदवनिवासही घटिकापंचाहिप्राणनियहनिरतनिहचेधा
रीये सिध्यसुनयहतेजधारणअग्निभयहोनिवारीये ३७ नुवोमध्यमयकारसहितकोणषट।
हिपुनिजेकहै ईश्वरअकितमधवरणहोयनिहचलतेगहै प्राणघटिकापंचसाधेहिपुनिसिधा ६
धनरप्रापत इमवायधारणासमजोनिरनेसिध्यनिहचेप्रापतं ३८ पुनिव्रसरंध्राहव्योमधार

6

रहनीमेंदरकूपरैसिधासनइहभाय १५ मेरदंडसधोरहेहसप्रसपरभीन ठाडीहियेलगाईये।
नासादृष्टप्रवीन १६ सुषासनसुषमेरदे सोत्रासनप्रवान विधानव्यापूरेहमेसहजेसोईठान
१७ पद्मासनयूंकीजियेजेघनकपगधार हस्तपृष्टसफरके अंगुष्टगहेनिरधार १८ अथप्रा
णायामवर्नन दोहा चतुर्थप्राणायामविधितीनभांतिकीहोय उत्तममध्यममहवुनसमजुस
ज्ञानजोय १९ द्वादसमात्रापूरियेद्वादसकुंभकराष द्वादसहीकररेचियेकनिष्टजुगतियहभा
ष २० चतुरविंसपूरककरे सोईकुंभकहोय चतुरविंसहीरेचियेमध्यमकहीयेसोय २१ व्रतीश
रकपूरीयेतितनेकुंभकधार तेतेरेचेजुगतिसूं उत्तमकहीविचार २२ देविधप्राणायामहै अग।
र्भसगर्भेहीचीन मंत्रसहितसगर्भहै अगर्भमंत्रविहीन २३ प्रथमपूरकइडाकूरेकुंभकराषेमा
हि पिंगलसुरतोरेचियेवहुरोविपरजयतांहि २४ वारम्बारअभ्यासकरिरोधपानसमाय त
बहीसुषमनाउलटके चूरसुंधूपुलजाय २५ चतुरकालयहविधकरैप्रातमध्यानेसांज अर्ध
रात्रपुनिकरतहीपापरहेनहीमांज २६ चौपई उलटअपानप्राणमहिलावे देउमिलकरिये
कसमावे मध्यत्रिकुटीकरैनिवासा झिलमिलजोतिजवलहैजासा २७ ससिहरिकेघरिसू
जेआवे रोमरोमजवपोंनसमावे अनहदधुनबाजघनघोरा अचलरहेमनतजेनठौरा
२८ छप्पय प्रथमभवरगुंजारशंखधुनिद्वितीयेसुनीये तृतीयवजतहेताल चतुर्थमृदंगाहि
गुनीये पंचमघंटानादषष्टबेणाधुनिहोई सप्तमवजतहेभेर अष्टमदुंदुभिसोई नवमेगर्जस

ग्या·स· एक जप आतम नति ५० ता पर अग्नि चक्र कहीये ललार हैं दल मे इच्छर पर वार माया सक्ति
७ कहीये जहां जाप सहज सय कच्छर पो तहां ५१ दोहा षट चक्र को ध्यान यह सुरति निरति करि
लीन उलटि विवान सकठे दके अजर अमर प्रवीन ५२ पिंडस्थ परम प्रचा मयाबे लेक मै कपा
२· झिलमिल नूर अपार लहि गुरु गम औघट घाट ५३ अथ रूपस्थ ध्यांन छुपय अजरामर
दल सहिस ब्रह्म निरवान रहावे शिव सक्ति मिल प्राय घोल सुषमन घर आवे श्रवन नासिका
नैन सैन अब गति मै कीजे अमृत गंग अपार धार निरमल जल पीजे रवि ससि कोट अनंत सोप
रम तेज प्रकास रघुवर पूरन प्राण के मिलि या ब्रह्म निवास ५४ अथ रूपातीत ध्यान छुपय रू
पातीत हंस सवास निरभे थिर धार ररंकार भर तार सुरति पर चे अनुसारा अडग अडोल अमोल
तोल बुधि मै नहीं आवे एकरस रति अभंग परम अनभव सुष छावे पांच तत गुन तीन न हिम
न बुधि रहत अषंड रघुवर रमता रमरहा तहा न माया मंड ५५ दोहा चार ध्यान करि हंस यह
जोग जुगति कर होय रघुवर दुरलभ भेद यह पावे विरला कोय ५६ सोरठा सिष्य सुनायो तो
हि सब अंग ये जोग के यत न मय निहचल होय समाधि लहे तब अंत मै ५७ अथ समाधि वरनन
दोहा दस काल अरु वसुनहि पिंड ब्रह्मंड न होय पूरण सुधा समुद्र मय सो समाधि मन जोय ५८
चोपई ध्याता ध्यान ध्येय गलताना भेद भेद नहीं कछु आना ध्यान मान अभिमान न माही अडिग स ७
माधि चले कछु नाही ५९ पिंड ब्रह्मंड दुहन दीप से महा कल्लोल वुझे आतम दरसे ना मन वसु नहीं दरसन

णसुक्खवोसुसोभिनं होइनिहचैधायसिवहीहकारअक्षरवइगुनं पुनिपंचघटिकाप्राण
लीनहिमुक्तिदातायहसहो धारधारणधोमतत्वहिनिगमइक्तजुपहकहो ३९ सोरठा यंभन
इवनहाहिनीत्रामनसोषनभेद सतगुरुविनानपाइयेयोंभाषतहैवेद ४० पंचतत्वकी
पंचधारणाभिनभिनठहराय अवअगोवरननकरंध्यानध्येयचितलाय ४१ अथध्यानव
रनन दोहा प्रथमध्यानपदस्थकर द्वितीयेपिंडस्थहीधार तृतीयेरूपअवानकेचतुरथअ
लषअपार ४२ अथपदस्थध्यान प्रथमपदस्थहीजान यहगुरुवाक्यश्रुतिसार तिनकाति
रनाभिनकहिसत्यअसत्यविचार ४३ नीरक्षीराभिन्नणकजोसारासारबिबेक संतहंसपयसा
रगहमिथ्याजगतअसेक ४४ अथपिंडस्थध्यान चौपई पिंडस्थध्यानअंगसुनलीजे पुन
चक्रनकोध्यानहीकीजे प्रथमचक्रआधारनिहारे कवलचतरदलरक्तसंभारे ४५ तामधि
गणपतिदेवबिराजे सुधिबुधिसक्तिसंगाइछाजे षटसतजापअजपाजपे अरपिगणेशसु
सिद्धापावे ४६ षटदलकवलपीतरंगसोहै संगसावत्रीसक्तिजोहै षटसहस्रजापजपली
जै ब्रह्मदेवकोअरपनकीजै ४७ पुनिमणिपूरकजायसमावे दसदलकवलनीलदरसावे
सक्तिलक्ष्मीसहसषटजाप बिस्नुदेवकोअरपोआप ४८ अनाहदनामकवलद्वादसदल
सेतवरनशिवदेवमहाबल उमासक्तिजापसहसषट रुद्रसमरपिगयेपापकट ४९ पु
निविसुधकंवलपलीजे फटकवरनदलषोडसकीजे जीवदेवताअविद्यासक्ति सहस

ज्ञा-सो नवप्रकारा कौन भांति के सो विस्तारा १ कौ उत्तम को मध्यम कहीये कनिष्ट कौन पुनि नीके लहीये सि
८ नलिन्य करि मोहि सुनावो मेरे मन को तिमर नसावो २ गुरु वचन गुरु कृपा करि उत्तर देई सिष्य को
समाधान करते ई ३ सिष्य तू अति सवड भागी तेरी मति हरि सं अनुरागी ३ अब तोहि न भक्ति भेद सम
झाऊं तेरो संसय सकल मिटाऊं सरधा सहित सुनो पुनि सोई भक्ति नाव विधि विधि की होई ४ प्रथम कहा
ऊं जो नव प्रकारा ता आगे प्रेम विस्तारा सो मध्यम पुन उत्तम परा श्रुति सिद्धांत सबही रह परा ५
अथ नवधा वर्नन छपय प्रथम श्रवन उरधारि दुतीये सुकीर्तन कहीये त्रितीये सुमति हरि नाम
पाद सेव चतुर्थ लहीये पंचम अरचन जान षष्ट में वंदन सोई दास भाव सप्तमे सख्यत्व अष्टमे होई न
वमे समर्पन कीजिये तन मन धन हरि भाय कनिष्ट भक्ति या कहत है जो पंडित कविराय ६ सिष्य वचन
दोहा नव अंग कहे गुरुदेव तुम मम मत अल्प न ज्ञान नीके करि तातें कहो समझ परे मोहि ज्ञान ७ गुरु
वचन चोपई श्रवन सुनीये पुनि निज विचारा नवधा भक्ति वेद को सारा हरिपुर पंथ सकल सुखदाई
श्रवन भक्ति सुनि कहूं बुझाई ८ मिल सतसंग न हरि गुन गाहा सुने श्रवन मन परम उछाहा जे अव
तार कथा बहु भांती ते उर धार रहो दिन राती ९ अरु श्रुति सार निगम जे भाषे सुन सुन अमृत हिरदे चा
षे गुरु संतन मुख वचन अपारा सुने प्रीति सो लागत प्यारा १० तिन में जे अपने मन भावे समझ प्रेम
जनता हि समावे श्रवन भक्ति यह अंतर धारे भोग कीर्तन आप उचारे ११ इति श्रवन दोहा हरिगुन गा ८
वे प्रीत सु गदगद कंठ उसास लोक लाज कुल कान नहि करे गुनन प्रकास १२ चोपई नाम कीर्तन गुरु

काल सुधसमाधि अंषे यह पाल ६० च्यार विघन समाधि मे गाये लय विषेप कषाय निरमाये रसा
स्वाद मिल च्यारो कहे विघन निवार समाधि सो लहे ६१ ध्यान समै मे झालय करे होय चंचल मेही विषेप
दहलही ये भोगवासना अंतर नावे रसास्वाद इह विघन कहावे ६२ कर्म कषाय रहे अलसाई चौपाई
विघन इह ठहराई जुगति जुगति यह भेद लषाया सिष्य समुझ जो हिरदे ठहराया ६३ दोहा च्यारो विघ
नानिवारि के उपजे सुधसमाध जो से बल चेतर की पवन सके नही बाध ६४ ता समाधि मे भेद है निर
विकल्प सविकल्प निरविकल्प अंतर करे वाह रहे सविकल्प ६५ सर्व खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति कि
चनेति श्रुतेः जो कुछ है सो ब्रह्ममय यह विकल्प इह समाधि मुनि निरविकल्प सुद्ध आतमा केतमाव को बा
धि ६६ कर्म समाधि आराधि के तन मन वायु कसुध ज्ञान समाधि विदेह चेतन जो जीवन मुक्ति प्रबुध
तथा च श्रुति ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः नान्यः पंथा विद्यते अयनाय तरति शोकमात्मवित् ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भव
ति ६७ कवित्त श्रुति को प्रवाण यह ज्ञान मोह जान लीह कामा कर्म छोडके निह कामकर्म धारीये ईजे ह
उपासना सो भक्ति ता सासना मान्त को उपाय न वृथा रसधाह विचारीये पराभक्ति होय धार जो वह
समे कतार सब गहाय सबा रूप भेद नमटारीये यहै मुक्ति मुक्ति भेद विधा ज्ञान सब सम वस्कारन
विधा और कारज निवारीये ६८ दोहा अष्टांग जोग बरनन कियो तामे रहो न सेष जो कछु पहे और
अब सो ईकहू विसेष ७० इति श्री रघुवरदास नकथित ज्ञान सागरे अष्टांग योग वरननानाम द्विती
यो प्रसंग २ सिष्य वचन चौपाई सिष्य प्रश्न करे मन लाई गुरु कृपा कर देहु बताई नक्ति कही तुमती

ज्ञा॰सा॰ अरु तुलसिका सुमन माल पहिराय २४ गंध धूप नैवेद्य जो पुंगीफल तांबूल दीप आरती ब्यंजन
६ वदु के है निरतंतर तंडुल २५ दयपूर्ण दिलानि माक्ष्म अस्तुति विधि विस्तार हाथ्य जोरि नितस्यय अ
ग्र प्रससा नेदत्तु चारे २६ कवित दीनके दयाल स्वामी जानत हौ अंतरजामी मैं हूं दीन दुखित सो
मोपे दया की जीये मेती नवजुमडु वत है तापर होती निनती पकाढि लीजे अब प्रभु मैं दान दीजिये
पति दव धारन सुविरद तुमारे पुनि चरननकी सेवदय जगजुग जीजीये अवना या फास काटि
७ के सुपास राषो आपने आहि आहिं नीत आति अैसे सुनि लीजिए २७ अगम अगाध सब पावन को
इनव ब्रह्मा सेस संकर सु गुन गाय हारे है नीति नीति निगम है करत उचार पुनि रिषि मुनि जोगी का
हूं अंत न निहारे है भक्ति वछल पुनि विरद तुम्हारो राम संकट पेरे ते ते सह्य कसि धारे है पूर्ण प्रीति
भावना सो सुधि बुधि धारि ते रघुवर दासन तो आपने के पारे है २८ दोहा पूजा विध जानत नही तुम
सरणागत राम दीन जानक रि राघव लेहु पाहि पाहि सुषधाम २९ सेन कराव तासकै आप पलंग पे पा
व विसकर्मा नारी करउ जो नेह सुनेह्न भाव ३० प्रभात समये तिननक पीक लेवे आप याविधा
करे जो अरचना छिमा तु हो हि सबपाप ३१ चामर छंद बहो हिरदे कंज धारि याविध अरचना कार
लीजिये अधी मुष ते करनु रघेता समम्यान न दीजिये रतन जटित महर अनूप कवल अष्टदल सो
शय मानसी कर ध्यान माही प्रतमा जु उत्तम सारीये ३२ धूप दीप नैवेद्य आरति विध अनूप नस ६
करे उमेठो रस असनानि हनुवे अनुक्रम करि विसरे जो अरचना रहै लहै परनमन्ति मरनालसहो

गणपाती उत्तरतर हैं दिवस अरु राती हरेराम कृष्ण इत्यादिक हिरदै सुरति कंठ जिह्वादिक
१३ कहे कहावे सुमति सार जो अध्यात्म वेद उचार इह कीर्तन भक्ति कहावे प्रेम सहित हिरदै मे
ल्यावे १४ इति कीर्तन चरित्र अथ सुमरण की जुगति सकल चित दीजीये तन मन निहचल होय
सुया विध कीजीये अवेरी अुसनान जान परवान है परिहाल छिन हद घन घोर जाय सुर आ
नहै १५ सोरठा सुमरण नाम कि यह होय माला कर मुष जापत पुनि प्राणव जप सोय नेम धारि ता
को करै १६ बहुरि हिरदै ठहराय नाभि नासिका अतलो मन पोन इक भाय जपै तु नम नो ह्वै तिसो
१७ सुमरण विध यह होय ररंकार धुनि रि मिर है षटमासे पुनि साय राम राम प्रकाश के १८ इति
सुमरण अथ अरचन्द पाद सेवा करण विध सुति निरत ठहराय के प्रेम प्रणाधारि सूतर मन है पो
नमिला युक्त संत हरि पद प्रीति अति प्रीति से सब तन मन सुकरे गुरु निकट वरती नीर [illegible] पिवे आ
छे मिर धरे १९ अरमोति निहार अस पद हरि पद हाथ मेल है जो चित्र विचित्र [illegible] यत तम [illegible] खान धा
रै वह जो छुन [illegible] करि के कह होय यां विध पाद सेवा रत हो कोई मागपर [illegible] या करा है [illegible] तरसीत
हो २० इति पाद सेवन दोहा अरचन विध सजुगति सकरी यह्या विध साय षोडसोपचार जा पा स्तुति
करे पुनि गुरु वायक जाय २१ बिम्ब रूप प्रतिमा लहै विध संकल्प असनान पुनि मंत्र रास सु चसी
जल ले अस्तवन विध तव कान २२ मन मुष वेठ पुनि वायु पुन जीते तन के अंग अर्घ पाद्य पुनि वि
छर हो अरन्वा वह हरि अंग २३ गंध सजुगति जल अर्घ करि पुनि तिलक आदि वनाय वस्त्रा भरन।

ज्ञान॰सा॰ ठाजगतअनंठाप्रेमलक्षणाप्रहलआसी ४२ नराजछंद यहप्रेमरीतहैअनूपहिरदैमाहिधारीये ज
१० गतअसमुखविलासमबहीकटारीये लोकलाजवेदरीतिरागदोषवेमडारीये सबुरावरको स्वज
तेभवनविचारीये ४३ छपय कबहूहसतरूदनकरिकेवसुरगावे कबहूमौनगहरहेटकटकीध्या
नलगावे कबहूफिरतकरिप्रेमअश्रुधारावहआवे तनकीसुधिनहीरहेसुप्रेमनक हदुरावे चकृत
केजितकितफिरैनीहरूनषविनामचाअकर्यवाहतफिरैस्वातिवुंदकोआस ४४ दूहा निसदिनतल
सप्पसहरिमिलनेकोरी वेदचकोरहिताहिमीनजलनीरहिहरी कामनकतहरलामैत्रीरजसवा
ऊ लकरीवे वृषलीपतिजोपसंगतेसबलेसषोवे जसमजाकेअरवाहिहैसोपुनितापेजाय बिनपायै
तरफेअधिकतेसेप्रेमसुभाय ४५ दोहा अनंतपजुगतिकरिकेकहीप्रेमभक्तिअगाधि जोजाके
10 उरमेबसेलहैसोतपदसाधि ४६ कविप्रेमअथमाभक्तिजोउतिकहीसमजाय पराभक्तिकीरीतिसो
सिष्यकहेमनलाय ४७ इतिप्रेमाभक्तिः सिष्यवचन चोपई स्वामिनकृपाकरीमोहिनारी ज्ञोप
छ्योसोकह्योविचारी नवधामेस्थलआतुरअतर पुनिप्रेमाकोनेस्पटतर ४८ सोतोमेअवनीकेज
नी पराभक्तिकहोवषानी तवमुषअमृतबानीवेद ताहिसुनतनासेभवषेद ४९ श्रीगुरुबच
न दोहा अवभाखेसुखकरणीजोसेवकसवप्रभाव निरनासभैभ्रांतिवदकोपराभक्तिसहनाव ५०
अर्धभुजंगीछंद पराभक्तिठानीसुहरदैप्रवानी मिलेस्वामिसंगा नहीभिन्नअंगा ५१ जेमरूपएको १०
लोयमाबसेका अभीरसपीजे सदाप्रेमनीजे ५२ लीयभावदासा मिलेसवपासा जंजजलतरंगा

[illegible]री पुनि वंदना विधि होय षष्टम जानि सिष्यनि हरचै सही ३३ इति अरचना विधि अमिला छंद
बंदन भेद लहै पुनि यो विधि होय अनन्य नहि पाय परे जू करि पुनि वाहरि अंतर ते सोहि दंड समान।
होलाज धरे जू काय कवाय क मान सतं पुनि वंदन रीति प्रतीति करे जू संत समै इह भेद बतावत
करै जन सोय सुपार परे जू ३४ इति बंदन अरिल दासत्व भेद इह होय सदा उरलाई ए नित्य भय।
संक रिजो रिक अग्या चा सीर बचन करै नही खंड रहै पतिव्रत ही परि होय यह दासत्व प्रवान कहै
गुरु सिष्य ही ३५ इति दासत्व अरिल सिषा स थापन भेद इह है गहे लीजिये मित्र मित्र ज्यों ना वस
दाम न दीजिये नेक न न्यारो होय निकट के छोडि के परि हरि रहै टकटकी धारि बिरति के जोडि के ३६
इति सख्य अरिल सकल समरपन करै सर्व अमन भाय के तन मन धन अरु धाम सुतन ते लाय
के सकल पदारथ रूप आपने नांव कहै परि होय यह समर्पन भक्ति ताहि हिट के गहै ३७ सोरठा कोति
ग्यु भक्ति यह होय नव अंगन संजुगति सै नवधा कहिये सोय षष्टम धरय यह री निजो ३८ ताते अफल
होय प्रेम वदै उर अंतरे कि ला विषय हेन काय हिर दै नुम गहि हरि मिलन को ३९ इति समरपन इति
नवधा भक्ति सिष्य वचन दोहा नवधा कही कनिष्ट आम धमा कहो सुनाय कृपा दृष्टि मो पर करो से
से रागन साय ४० गुरु बचन सावधान के चित दे जो तैं सिर भाग भक्ति मध्यमा अव कहूं प्रेम रीति।
अनुराग ४१ तरंगी छंद यह प्रेम अनन्य पास भ सुख रूप भव भय नास च चुरासी किलविष मेटे हरि
पद भेटे कंता मिलावे अविनासी रहे अटपटा लेवे गटका उनमत रूपा निरवासी तो गद गद कं

ज्ञा॰सा॰ मोय १० सोरठा वाच्य अर्थको त्यागलक्षारथ कीयेकता तत्त्वंअसी समाज ओ त्यो लक्ष भेद है
११ ११ त्यागभय केदेसतुछ प्रकासी एकजो सो चेतन्य तत्व एक असी असी भिर भेद है १२ कार्य कारण
स्वरूप भेद प्रतिपाद्य चेतनाशयति तथाहि मुद्दोऽहं वै कोनारायणः इत्याथर्वणश्रुतिः १३ चौपा
ई प्रज्ञानमानंदब्रह्म कृगावेद अहं ब्रह्मास्मी तत्व अभेद जजुरवेद वाक्य लहीये तत्वमसी साम
यह कहीये १४ अयं ब्रह्मास्मी अथर्वण कहै अषंड अर्थ ज्ञान इह लहै विद्या ज्ञान इहै पुनि कहीये
नृत्य करि हिरदै निरंतर गहीये १५ कारण अविद्या तत्पद वाच्य है त्वंपद अविद्या कार्य साथ
है उपाधि उपाधी तिन के कहीये चेतन अनादि मिले ही लहीये १६ सर्वज्ञ किंचिज्ञता तत्पद होय
सो त्वंपद हि अलपता जोय तातें तिनको बाध जु करीये साखी चेतन उर में धरीये १७ तथा च एक
मेवाद्वितीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचिनेति श्रुतेः अषंड ज्ञान उपजे गुरु ज्ञान ज्ञेय ज्ञप्ता भिन पिछान
ज्ञेय ज्ञप्ता ज्ञान स्वरूप ज्ञेय तें भासे सर्व निरूप १८ ज्ञान रूप साई है सत्य जो आनंद अरु अनित्य आ
नंद बिन जड दुषमय कहीये सच्चिदानंद रूप सुष लहीये १९ कार्य का अविद्या छिके लक्षारथ करि टे रामः
क सो ईस चिदानंदघन तत पद त्वंपद एक २० चितते जड की व्यावृत्ति करि जड जड को त्याग सत
तें असत्य त्यागीये आनंद करि दुष भाग २१ चौपई सो तत्पद अरु [illegible] पुनि देसकाल वस्तु
कहि गाये तें असत्य जड है दुषरूप देसकाल वस्तु ब्रह्मरूप २२ प्रछिन्न देन रता तें य त्यागे लक्षारथा
सि मुमुक्षु अनुरागे सदा अषंड रहित परछेद ओ [illegible] वाच्य तजि भेद २३ शिष्यवचन तत्पद ११
त्वंपद के से तुल्य कार्य कारण भेद अतुल्य जो सर्वज्ञ ता जो अल्प हो जे अरु पुनि ईस हि अल्प कहीजे

मिले संग रंगा ५३ अगनि संग दीपा लहै रजत सीपा पराभक्ति ऐसी अभै धाम पैसी ५४ अ
दिल सेवग सब प्रभाव मिले एक संग ही उभै अंग सम तुल नहीं कछु भंग ही दासत्व भावन
त्याग सदा सुष विलसै है परि दृाय एकसो होय पै ऐ कह्यो ना कहै ५५ दोहा पालाजल कछु भेद ना
हि वीयव घटे सोय मद विकार मद मय सकल पराभक्ति यह होय ५६ सोरठा सकल व्रतायो भेव
उत्तम मध्यम मंद सो मिले निरंजन देव जो अमर धाक रिउरधरै ५७ इति श्रीरघुवरदास सन काथि
ते ज्ञानसागरे त्रिविध भक्ति योग वर्ननो नाम चतुर्थो प्रसंगः ४ सिष्यवचन चौपाई हम सुने अ
ति से सुष पायो जो प्रभु सो उचार्यो कर्म जोग अरु भक्ति सुनाई ते ते मैं नीके ठहराई १ कछु
इक संस्कार रही मनमाही सो तुम मन या नष्ट के जाही अब मोहि ज्ञान प्रभाव सुनावो तत्व वाच्य लक्ष्य
समझावो ५२ गुरुवचन अब सिष्य सुनो ज्ञान निरवेरा ताते संसार रहे न नेरा श्रवन मनन निदिध्या
सन करै सो तात कार ता तें अनुसरै ५३ दोहा दृष्टांत काष्ट मथन तें अगनि जु पदीप्त मय के हस्त सो
य पाहन तपके धातु जो उपजावे सुनकोय ४ दृष्टांत महावाक्य विचार विन किया ज्ञान न आहि
गज मुक्ता जो गज विषे और कह्यू नहीं आहि ५ तत्वमस्यादि महावाक्य जे ताकै पद है सोय तत पद ई
श्वर है सदा त्वंपद जीव हि होय ६ यह प्रकार तत पद अर्थ एक वाच्य यक लक्ष त्वंपद के हैं दो वा
च्य लक्ष प्रतक्ष ७ यनकं नीके जो न के समार है न कोय त्रितीय असिपद लक्ष है सो है का एक समा
य ८ सिष्यवचन तत पद त्वंपद के है वाच्य लक्ष निरधारि पुनि असी का पाई एक हो गुरु वि
स्तार ९ गुरुवचन चेतनादि रहे होय जो सब तें पार गहोय देश काल पुनि दाय नहि रहा वचन नाम स

ज्ञा॰ विरोध सत्य असत्य न कै सके असत्य सत्य नहीं होय ७ तातें सत्य असत्यता मिल्यो सरूपन जान ।
सा॰ तीन युक्ति येन सहे सो अनिरवचन बखान ८ चौपई आत्म तें भिन्य कहे जो कोई तो है कोटीक री
१२ ये सोई सो पीतिरूपो भिन्य कहावे इह तो निर्मुक्त सहो न होजावे ९ सीप अज्ञान रजत सत्य होय आ
त्म अज्ञान सत्ति त्यों कहीये सो पी रूपो भिन्य नहोई रूपे सो मिल्यो न सो सोई १० आत्म शक्ति मिल्य प्र
कासे ताम भये ते शक्ति न मासे भिन्याभिन्य सरूपो सीप आत्मशक्ति जाने यो होय ११ तीन युक्ति ये
सहे न जाय सो अनिरवचनी नाम कहाय आत्म मे सावेव कहे जे तो सुषपति मे क्यों लीजे १२
सुषपति शक्ति साधन होय अरु निरवेवल कही ये सोय जाग्रत सुपन माहि सावेव तातें सो ने
12 होय निरवेव १३ सुषपति मे निरवेव सावेव दोनो मासे हित सावेव तीन युक्ति येनी न दोस होय
अनिरवचने ताते पुनि कहीये १४ ताहा अनिरवचन न वयुक्ति कोरि शक्ति कही समकाय पुनि
सो अप्रतिपन्न होय असह सहो न नहीं जाय १५ शिष्य वचन चौपई असत् युक्ति शक्ति कहीये द्वै
स भेद आत्म मेल होये हेमकाल ब सु परछेद युक्ति सहा शक्ति इह भेद १६ जाग्रत सुपन सुषापति
होय सावेव निरवेव सो कहीये द्वाय युक्ति सहाय शक्ति बषानी अनिरवचनी कारे तेठानी १७
गुरुवचन अनिरवचनी शक्ति ये कहीये भाव अभाव पुनि तामे लहीये जैसे मृग जल हुइ सु भा
व जो दरपण प्रतिबिंब समाव १८ स्वप्न मे सावेव कहे नाही मृग निरवेवन कहे ये ता ही मृग
मरीचिका विना विचार साच जान करि धावन हार १९ इह जो लह सो हसमान विचार कीये जु १२
ठो पहिचान आ चेव सावेव सरूप मे नाही भास मात्र सम ने इस माही २० जाग्रत सुपन की जु सावे

२४ जोतत्पदत्वंपदहोयसमान तोकेकाहेकरेवखान तातेंकृपाहृदकरौजे २६ तुतरमेरिनो
कैदीजे २५ श्रीगुरूवचन सुरससहितराहृजवहाई होततुल्यताकहोतसोई भकासमहितुल्य
तानहो नटकवोजन्यायउपजोहो २६ कृटकमिष्टवीजजोकहोतो कार्यमाहितुल्यताल्लहोय
जदम्रसत्यदुषकारिउपाधि सोकार्यमेरहेम्रनादि २७ तुल्यजेयपजानोसोई भागत्यागकरि
देषकोई श्रोतम्रतहलादोउत्याग प्रहेछदमेहतामेनहीलाग २८ तथाचश्रुति कार्योपाधिर
यंजीवकारणोपाधिरीश्वरः कार्यकारणताहित्वापूर्णबोधावतिष्ठतेतिश्रुतेः २९ ताते सहजप
कतामई श्रोतम्रतहलाचतागई कार्यकारणमेदनिवार लक्ष्यारथकीन्होनिरधार ३० होत
कार्यकारणएकता सेषपजोनकहिदीन कारणतेकार्यमयोश्रवसुनहुप्रवीन ३१ इतिश्रीरघुव सो
रदासेनकथितज्ञानसागरेकार्यकारणभेदवरननंनामपंचमोध्यायः ५ सिष्यवचन सोरठा
तत्पदत्वंपदसारकह्योगुरूसमझायके श्रवउतपतिविस्तारिम्रनुक्रमकहिवरनाय १ गुरूवच
न दोहा कहतुगतिसन्तपकरि भासीभासप्रवान कार्यकारणसविनजोचेतन्यएकसमान तथा
च ततसष्ट्वातदेवानुप्राविसत्इतिश्रुतेः प्राक्प्रवेसचेतन्यमाहि भ्रनादिकालकोजाय कार्यपू
वेसभिदाभाससोभ्रमकार्यमेहोय २ तथाच देवात्मशक्तिस्वगुणैर्निगूढां इतिश्रुतेः एक्कसमे
सचेतनामहिमाकिरहोठहराय देवात्मशक्तिसाकहीश्रनिरवचनीहैमाय ४ सतयुक्तिकरिके
कहेम्रसहसहैनहीजाहि देवप्रकासस्वरूपमेसतपनकहीयताहि ५ जोसतपकहीएतासमेज्ञान
करैनहीबाध बहुरश्रसतपनकहिसकेश्रात्ममाहीसाध ६ सतपश्रसतपविनागहेयोंकहेहोय

ना. अविद्याकहीयै रजतममलिनमिलितसुल हीय ताहि त्रिगुणमय चेतनभास त्रिविधजीव त्रिगुणउ
१३ पवास ३५ विश्वतैजसप्राज्ञतेनामा त्रिविधजीवकोटीमेधामी स्वतजकमनुष्यवहुजाती चारवा
निजीवनकीजाती ३६ दोहा कार्यप्रवेसउत्पतकरिपुनिअस्थितीदिषाय अत्नासेहारदिषापंदसम
उसस्यामनलाय ३७ सवैयाशरीरसिंहारकेईस्वररहरूप संहरतासंहारकरिभयोतसोअनुरूप ३८
शुद्धसत्वस्वरूपमलिनसत्वएकनयपहसोय माययावस्थासोकहेईस्वरपुनिप्रलेजोय ३९ संहारकसो
सोतीपकेवहुर्केइउतपत्य विचारकीयेलेलहतहेअकृतिमुक्तकीगत्य ४० इति श्रीरघुवरप्रसन
कथितज्ञानसागरउतपतिस्थितीसंहारवरननोनामषष्टोप्रसंगः ६ शिष्यवचन सोरठा माहिकेहो
गुरुदेवजगविस्तारणभेदजो किहिप्रकारसोभेवईश्वरजगइहनिरमयो १ प्रथमनयोकिहिभाय
शक्तिरचैकिपुरुषही अनुक्रमकरिसमझायसमसेतासमवही २ दोहा गुरुवचन सुनोशिष्यचि
तलायकेअवरनसहितविधान समझेसभसमानउतपतिजगरविज्ञान ३ चौपई प्रथमसुद्धनिरंज
नकहीये चेतनभावतामेनहीलहीये ताकेयकदेसमेशक्ति अव्याकृतनामअव्यक्ति ४ तासमलेय
चेतनभास साक्षीनामकहपुनितास अव्याकृतिनामअज्ञान त्रिगुणमयसोमनेईपकहतान ५ सुद्धस
त्वप्रधानतालहीये मायानामताहिकोकहीये मलिनसत्वप्रधानताहोई अविद्यानामकहसुनिसो
ई ६ तथाच मायाचाविद्याचस्वयमेवभवतीतिश्रुतेः तिनकेमिलियेचेतनभास ईश्वरजीवकहे
पुनितास मायासेमिलिईश्वरभयो नित्यमुक्तताहितिकसो ७ तथाच मायाभासेनजीवेशौकरोतिति १३
श्रुतेः अविद्यासेमिलसाक्षीभास जीवनामकहेपुनितास विक्षेपशक्तिईश्वरकीहोई आवरणा

व अरु सुषपति को त्यों निरवेव माया भाव सो विना विचार अनिरबचनी शक्ति यं धार २१ दोहा
तुछ्या सत्या भेद है ज्ञान अज्ञान सुभाव ज्ञानी तुछ्या लहत है अज्ञानी सत्त भाव २२ अज्ञान हू पै सत
सो लगै त्रिधा ईश्वरी शक्ति तुछ्या सत्या भेद जो और विसेषण रिक्त २३ चौपाई त्रिगुणात्मक और पुनि
कहीये आ वनि विक्षेप शक्ति सो लहीये १ शामा है भेद है जेमे स्वतरक्त स्याम सुते मे २४ एक देश
चैतन मे शक्ति त्रिगुणात्मक जानइ चिन्माने सतगुन स्वेत रक्त रजोगुन तमगुन स्याम मिन्यता साधु
।ते २५ बहुर विचित्रता कहू बखानी य रजतम रहित सुद्ध सत्व पाय सतत मन्यारो सुद्ध रज नयो स
तरज न्यारो सुद्ध तम सुठयो २६ त्यपुनि त्रैगुण मलिन कहावे तिन को तिरनो आग पावे जे सरजुती
न रंग मिली सत रजतम मलिन यामिली २७ सत रज तम सुद्ध तेन्यारे असो बीचनत लिये निहारे
ये कदे सशक्ति मद माया अध्यारोपि करिके ठहराया २८ आदि काल चेतन के मांही सुध सत्व माया
ठहराही उतपति काल भयापुनि आगे चेतन्य नाम शक्ति लीय जोगे २९ तथाच माया चाविद्या चे
स्वयमेव भवतीति श्रुते: यह श्रुति नेकी यो प्रमाण मायासुद्ध सत्वमय जाण सतगुन मिलियां चे
तन नास विष्णु नाम ईश्वर प्रकास ३० कारणी भूत पालता होय पुनि रजगुन मिल चेतन माय सो
भयो ब्रह्मा कारणी भूत सिष्ट उपावन परम अभूत ३१ चेतन भास तमोगुण मांही कारणी भूत रुद्र
तसां आही संहरता कहीय पुनि ताकू ईश्वर कारण त्रिगुण जाकू ३२ त्रिगुणी माया अरु चेतन्य सा
भाव स्यां ऐकै समष्ट गुणस्मत वंधपायकै तोई ब्रह्मा विष्णु रुद्र है जोई ३३ ईश्वर को इम तीन्यां कहीये
अव तात्म समयाही मल कहीये यह कारणी प्रवेश महे ज्ञान अवकार्य ताकर स्यांन ३४ मलिन सत्व

अहंकार तिन मिलसा जो मसभ संसार २३ तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशसंभू
२४ तः आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः ओषधिभ्योन्नमन्नात्
द्रेतः रेतसः पुरुषः सर्वो वा एष पुरुषोन्नरसमयः श्रुतिः २४ इस प्रकार तिन प्रगट मिला यौ शब्द
रूप तातें प्रगटायौ शब्दहि प्रगट किया आकाश ताते बहुत भांति अवकाश २५ आकाश तें
तन सपरसमयो ताते वायु सहि उनिरमयो बायहतें पुनि प्रगट्यौ रूप रूपहि तें जको तत्वहूप २६
तेजो रसमय पुनि प्रगटकीन ताते आपप्रगटमयो चीन आपतें गंधमइ उतपत्य गंधहि पृथ्वी
भइ सुगत्य २७ दोहा भूत गोचिरक्रम अभू सते कह्यौ प्रगट विस्तार सतरजमिल इइ भइ तेतो
14 असानरधारि २८ चौपई आकाश अस कीई हैं दोय श्रोत्र वाककर्द दोय पुनि सोय श्रोत्र ज्ञान श
ब्द को करे सुनि बैस्वाक कर्म उचरे २९ बायु अस द्वै ईजान एक तु वाइजे कर मान त्वचा ज्ञान सप
रस है सोय हस्त ग्रहण आकार त्यागी होय ३० तेज अस द्वै जो भई एक दृग दूजो पग लई दृगहि ज्ञान पद
रथल हीये पद कर्मताय तसो चलनइये ३१ आप अंस द्वै ही कोनी जिह्वा उपस्थ नाम ते चीन्हि जि
ह्वा ज्ञान रस कौ पुनि करे उपस्थ आनन्द कर्म विस्तरे ३२ पृथिवी अस द्वै ही होय एक नासा दूजो गु
द जाय नासा ज्ञान गंध कुलहै गुदा कर्म मलत्यागर है ३३ दोहा मन इइ मन अस ते रजतें कर्म ही
होय अंतःकरण उपाव से मिश्च सुनो प्रश्न वसोय ३४ पच भूत सत अस मिलि अपचीकृत मिला
य अंतःकरण कह्यौ अंश सो है व्रतिताने चाय ३५ संकल्प निश्चै नाव हम नवु चितनके नाम म २४
न संकल्प सरूप है निश्चै बुधिका धाम ३६ इते चारि विचारी ये मन बुध चित अहंकार अहंकारम

क्तिजीवमैंसोई ८ येकाहैईश्वर राकम भयो जीव और भेद तातीन नहीं कीव तातें सत्यवादक रिमा
नो अस्मा याके प्रमाण भापन्ना ९ प्रमा ममा हिवा प्रकृता नहीये चिदाभास ताही के क
हीये उपाधि ने ईश्वर तब सोई त्रिविध रूप भयो सोई १० शुद्धसत्व कहै ताया कम के वि
क्षम भयो निमित्तता धरि के ईसहत्तणतमहक्ररी समवाय कारण कहै हो धरी ११ शुद्ध रजो
गुणा बुद्धा हाय उपादान कारण गुनि सोय ब्रह्मा विष्णु रुद्र त्रिय हो ई उत्पति पाल संहार।
सोई १२ हो ता कारण भाग ईश्वर भयो कार्ज जो विही ज्ञान सर्व ज्ञाता चलत्त्रयो नि भिन भिन प्र
धान १३ जीव अविद्या नासी मिल भयो वहुत प्रकार अविद्या लहो अनेकता अंतःकरण मा
र १४ मलिन सत्व अविद्या कहीता में कारण देह कारण ताईश्वर विशेष ते उतपति सूक्ष्म देह।
कारण शरीर जीव का कार्य उपाधि पिछान कार्य ते कारण लहै जो कर्म नव कारजान १६ जीव
अनुभवे आप के सुख दुःख ज्ञान सरूप कर्ता भोगता मनुष्य लहै उपाधी रूप सु बुझन दीजे जो
तहू कार्य उपाधि विशेष कारण उपाधि ईश्वर भया तामहि अवातर देष १८ त्रिगुणात्मक अंतः
करण अपची कृत समाय महाभूत कार जलहे तिन मिल जीव कहाय १९ त्रिधारूप के विस
हाविश्व तैजस प्राज्ञ सुषुप्त भकार लहै अमाहि अवातर जाने २० चौपई चेतन सहिता
विसवता लीन चिदाभास मलिन तम भीने प्राज्ञ नाम सो जीव कहावे संचित कर्म सहित पुनि
आवे २१ प्रलय रहै ईश्वर मे लीन साम्यावस्था नाहिं गुनि तीन जीव निमित्तता ब्रह्म सरूप उपा
दान के वृक्ष रूप २२ तब फल देवे जीव उपाय महतत्व प्रगटो पुनि आय तातें त्रिविध भयो

वैरा- पंचेन्द्रियतन मध्य और सो जिह अंतर भूत ते है सो तिगवन नाठौर ४७ काजे कामिजे हुयुनि भयो पर
१५ सपरसोय कारणी अब्याकृति इह केजीव ईस कौ होय ४८ सुखपति प्रलै धाम ते प्रगाढ्यो लिंग श
६ रीर सौ विधि करि विस्तरो जो जीव ईस मिल सौर ४९ रजोगुण ईश्वर एक संग अनेक कृतांत ना जीव ईश्वर।
विष्णु सरूप में अनेक ते गुन सौ कीव ५० दपा इंद्री मन बुद्धि ले पंच प्राण मिल और ईश्वर सो तिक
विस्तरो लिंग सरीर इह ठौर ५१ हिरण्यगर्भ ति हना मद्धे और तेजस सो जीव भोग भोगता हृत क
रिश्चो विराट यह सीव ५२ सोरठा ईश्वर कारण धीमत सु धरत्री दि चित्त ताण करे अपंचीपंचो भूत
15 तम असत अतपाल करे ५३ सो तिक मन नामिलाय प्रकृति पंचीसो विसतरी। सो अवकहु बनाय
समझ मन धरधारीय ५४ चौपई पृथ्वी अपतेज वाय आकास सो तत्ल पांचो प्रकास तिनप
चनते भये पचीस ऐक ऐक ते पंचो रोस ५५ पृथ्वी तत्त है काठे सम अस्थि मांस नाड़ी तुचा रोम
अस्थि सेव पृथ्वी मेरहे कठन पीत वरन ते गहे ५६ मांसठ रुक्के ड्रवत चिहन नाडी तिसरूप
वलवहन तुचा पवन के सपरस होय रोम अकास छेदे नहु सोय ५७ अपते प्रगट प्रकृति यमा
ल रेत पित स्वेद रक्त लाल अप सेषवी रजे है सत्य सु श्व वरन राभे जत पत्य ५८ पित ते जंके गुच्छ
लन धर्म स्वेद पवन को गवन सुकर्म लाल अकास अग मेहेरध रक्त मदी को लोहित अर
ध ६० तेज तत ये की नी मात क्षुधा तृषा निद्रा लसकान्त क्षुधा मो हृते जम रहो पवन धर्म ही १५
हने ते लहा ६१ त्रिषा पवन स्रके कंठो छूट निद्रा गगन सुन ता को छूट कांत तुइक सी ता प्रसु नाव
आलसम हीको जहतमाव ६२ वाय विधान प्रगट करि साच धाव पसारो संचल सको च

नेमैवसेबुधिचित्तनिरधार ३७ सोहंगवननामदयंनिरनोहैततसार मनबुधियहैमोहंहंगा
बनोचितअहंकार ३८ मनसंकल्पसरूपहैबुधिबोधहोठान चितचितवनोरूपहैअहं
अहंतामानि ३९ चितवायतनवगहेअंदअंगनिकोनिहाय मनजलइवनपृथ्वीबुधिबोधरूप
पहसोय ४० सत्वअपंचीपंचमिलअंतःकरनबनाय औरप्राणकोभेदजोसोसुनोयेचितला
ल. य ४१ अरितरजगुनमिकेपंचभूतकेअसत एकएकलेकोदिसअंससतते अंसेसभन
मिलायकत्योजबप्रानरे औरहोसोवरननिरधारबुधिकरिजाणरे ४२ प्राणापानसमानव्य
दानअरूध्यानहै एपंचोप्रधानपंचओरपुनिजानहै कर्मकृकलनागदेवदत्तसायरे पाँ
चोपंचमओरनिहारधनंजयजोयरे ४३ छपय पुनिवरनंउतपत्तिभेदफिरनेसमजाऊ
प्रानधनंजयवायगगनतेप्रगटवताऊ देवदत्तउद्यानवायकीवायकहावे प्राणकृकला
जानतेजतेप्रगटरहावे करमवायसमाननामईअपतेपत्ति अपाननागयेधराते
उपजनईसमसत्य ४४ प्राणकयायहजानानिनकरभेदवतायो छुधापिपासहर्ष[illegible]ओरि
स्वेदउपजायो गुदावसेअपानजानमलत्यागतसोई नामसमानरहाय अन्नपचपावतजोई
उदानकंठमेंवसहेस्वासोस्वाससाकहाय व्यानजुव्यापसर्वतनरसकहरूपमिलाय ४५ नागहि
याउदगारकरमपलपलकलगावे छींककृकलाकरैदेवदत्तजंभाप्रगटावे पुनिवायुधने
जयकर्ममृतककोफूलदेही इहप्राणकोधर्मप्रगटकरिकहीयायेही सनेअनामधर्महै
त्रिगुणमयविवहार जीवअपकेमलकरिवहीअविद्याधार ४६ दोहा पंचप्राणतेमैकहे

स्वा० होजु राम रनन नहीं होय करा मन समाइये २ चौपई तेतप रचो चा प्रथम सम जाऊं तं पद भेद वहूर क
१६ हि गाऊं ता उपरांत तल तलहि लीजे असे भ्रम हेतसम कीजे ३ सुध ब्रह्म प्रथम तेहि कहीये निरा
कार निरवचनी लहीये माया भेद भेद तिहि होई वाचा विसबल ताहि पुनि सोई ४ जगकारण अंत
रजामी सर्वरूप सर्वस्वर स्वामी भक्ति वछल करुणामय सोई ईश्वर ताहि पुनि कहीये सोई ५ उत्
पति सुष सम्नासा यो निल्हा माहि सबही पोषो त्याग्यपनो ब्रह्मरूप वेसा सो जगकारण ताई सनि दा
सो ६ दोहा सब्बा मेव्य विभाग में पक्षपूरुष सुषधाम उनमक ग्रगुन धारि के लहे रूप अरु नाम
७ सुध सतोगुन पाय के उतम गुन विवहार ईश्वर वाचक सहसाय पुनि कहो तत्त निरधार ८ सनि तन
पद वाच्य चौपई सुद्ध तत्त ताको अवलष लीजे माया चव भेद समन हीजे निराकार निरगुन अवचना
16 सी निरवचनी निरमल सुषरासी ९ नित्यानंद विज्ञान सरूपा चेतन अमल अनंत अनूपा पुनि
निरलेप अचल लष सोई ऊपर सिष्ट अस्थूती होई १० दोहा वाच लक्ष पुनि ईश्वर को भेद तप कही
समकाय अवलंब पुनि कहि करि निरु जुगति जुगति मन लाय ११ सनि तनपद लतं अथ लष वाच्य
चा मर लह प्रथम लष रवाच वरन लक्ष पुनि समकाय रूप अज्ञान मिल चिदआभास मानो अहे देह
सु जाय रूप स्याम गौर सुह्र दीर्घ कार न वधीर है हीन कहे जाति वरन कुल गोत अरु आश्रम वरण आपे मे
लेहे १२ कर्म क्रिया भेद मैं तें विधि निषेद ही ठानि के काल अरो फिर वह इस लोक चोद हि माहि
के कहे रघुवर भेद वहु विधि पंच कोस में होर रहो मल आपहि सुद्ध चेतन ताप त्रिविध सह रहो १६
१३ दोहा पंचकोस मय मानि करि अरु जीव कहे होय अन प्राण अरु मनोमय विज्ञान अनंद ही

धावनमात्र पवनमेरहै चलनचिह्नतेनीकेकहे ६३ पसर्नैनभकोव्यापकाचिह्न उष्ठनतेजउ
स्नसुवहन अपकोचलइवतापहिछान संकोचनजडमहीप्रवान ६४ नभतत्वतयकीनहेका
म लोभमोहक्रोधमत्सरकाम लाजमोहगगननहारदी अवकासचिह्नतेनीकेकही ६५ का
मपवनकोधावनचिह्न क्रोधतेजतेउसमहीदहन मोहहहकमेलनेसनवध मदीमत्सरजत
ताअनुसंध ६६ करस्थाननमेपृथिवीजान कठनचिह्नतोकियोप्रमान उइस्थानमेजलवखा
है स्रवतचिह्नतेनीकेलहै ६७ रिदमाहितेजककहीय पवनसमर्थचिह्नतेलहीये कठमाहि
पवनकोवास गमनागमनचिह्नप्रकास ६८ मूर्धस्थानजानिआकास जामेजोगीकरैनिवा
स ओमममधवाहिरअविनासी जामेकहतमुनिसमदासी ६९ सोरठा ऐसोजुगतिबनायपं
चभूतकेभागकरि दीनेतिनहिमिलायवातपातसोपरसपरि ७० करिस्थूलशरीरपंचीकृत
ब्रह्मांडसो इश्वरकरिविस्तीरकारजपंचीभूतको ७१ पिंडब्रह्मंडविधान लोकचतुरदसानरमये
चारोखानप्रमानस्थूलशरीरसुजीवको ७२ लोकलोकप्रतिधार प्रारब्धविचित्रतेकीनेसक
लसवार शरीरसुचारोखानके ७३ दोहा पिंडब्रह्मंडविधान इहवरन्योकरिविस्तार वाचालतक
रिजानीये भेदभिन्नउरधार ७४ इतिश्रीरघुवरदासेनकोथितज्ञानसागर सूक्ष्मस्थूलवरनना
नाम सप्तमोप्रसंगः ७ शिष्यवचन चौपई थूलसूक्ष्मकोरयातेकही सोतोमैनीकेकरगही गुरु
वाचालतहमैरहुनिकरीये तातेहमकोनिहचैहढगहीये १ गुरुवचन अरिल सवतमकोक
सिघ्रसुनोचितलायकैं जीवईसव्हैवाचालहेतामायकैं नासततमअज्ञानपरमपदपाइयेपरि

ज्ञा॰ होव सुषपति निंद्रा सुखकी रासि सदा अचेत लहै नहीं भासि २७ जीव ईस अरु ब्रह्म तावे
सा॰ अपने स्वरूप कहं पावे महा अधम अज्ञान सुभाव आनंद कोस है ठहराव २८ पारठा
१७ पंच कोस यह हिते परखचि सुमानीये महा पंच कर तोय जीव मलिता केरो २९ अथ अवस्था-
जाग्रत अवस्था वरनन तीन अवस्था वाचिक हैं वरु सम जाय के प्रथम जाग्रत सो भाय
सुपन सुषपति आगे लेख ३० चौदह इंद्री देव विषे नाना प्रकार स्थान ठेह अस्थल संग व जाग्र
त को समन जास है ३१ अध्यात्म अधिभूत अधिदैव को भेद समझ कहूं सकल अनुसरत गिर
जैसी विधि होत है ३२ दोहा अथ त्रिपुटी वरनन श्रोत्र इंद्री अध्यात्म दिसा देव अधिदेव
17 शब्द विषे अधिभूत ये त्रिपुटी इह कहि देव ३३ तुचा इंद्री अध्यात्म पवन देव अधिदेव स
परस है अधिभूत जो त्रिपुटी इह कहि देव ३४ नेत्र इंद्री अध्यात्म रवि देव ते अधिदेव रूप
विषे अधिभूत है त्रिपुटी इह कहि देव ३५ जिह्वा इंद्री अध्यात्म वरुण देव अधिदेव रस अ
धिभूत कहै तहां त्रिपुटी यह कहि देव ३६ घ्राण इंद्री अध्यात्म अश्विनी सुत अधिदेव गंध वि
षे अधिभूत है त्रिपुटी यह कहि देव ३७ वाक इंद्री अध्यात्म अग्नि देव अधिदेव वक्तव्य अ-
अधिभूत है त्रिपुटी यह कहि देव ३८ कर इंद्री अध्यात्म इंद्र देव अधिदेव ग्रहण क्रिया अधि
भूत है त्रिपुटी यह कहि देव ३९ पद इंद्री अध्यात्म विष्णु देव अधिदेव गवन विषे अधिभू
त है त्रिपुटी यह कहि देव ४० उपस्थ इंद्री अध्यात्म प्रजापति अधिदेव आनंद विषे अ- १७
धिभूत है त्रिपुटी यह कहि देव ४१ गुद इंद्री अध्यात्म जम देव कहि अधिदेव मल विसर्ग अधि

जोप १४ अरिल अंनकोमकोभेस्वप्रथमउरआनीये सप्तधातकोइदइहेममानीयें
घटाधिकारमनुगतिजपनिअतरलहै परिहामलिआला आपथधवहतेगहे १५ नरीरत्रीस्थि
मत्र येधातुपितातेमानीये तुचारी मज्जरमासरक्तमातुतेजानीये जायतेअस्थिधृतेअग
विपरीती नरे परिहाम्रियतेआगे आरमानिपवीनर १६ दोहा सप्तधातुषटमोवगाहिअ
नकोसप्रहहाय विप्रसपचप्रसंगलहिस्वसरूपकरवाय १७ चोपई कोसप्राणमयसुनी
येआगे समकलेसमसमभागे प्राणवायुइहधर्मपिछानो तृषाविपासाआदिकजानो १८
अमरीवजरीत्यागकरीजे उदरगुजरसखादलहीजे हाथपावपुनिइहपसारे संकोचककेविध
वलधारे १९ सोरठा प्राणधर्मइहजानिजीवमानितामेवधा पत्नाकमअग्नतानप्रतिबिंवत
जोसिहहो २० चोपई मनोमयकोसकहूअवओर सकलविकलपितनठोर जलतरगम
मेहविवहार सुनअसुमनहीकरविचार २१ जितकितवहुमोगअगोगा पापपुन्यअरसोकअ
सोगा स्वप्नमाहिरा जाहायवेठे सुतपरिवारभोगलहिअठे २२ दोहा मनमयकोसयहजान
लेछिनमगुरविवहार विज्ञानकोसपुनिकहतअवबुध्धिधर्मनिरधार २३ चोपई बुधिको
निहचेधर्मसदाहि भोगवासनअतरचाहि कर्मधर्मवहुभातिनकरे मनमेविषेसुषनकधरे
२४ सुरनरनागलोकजहांडोले सुषअमिलाषलिचेतरतोले जपदानतीर्थव्रतपूजा सुषउठा
नाविनकरेनदूजा २५ दोहा इहविज्ञानंदकोसजोबुधिविरतिअनुसार आनंदकोसपुनि।
काहेतअवताकोसुनोविचार २६ चोपई अज्ञानआवरनकीहेजोय वधमात्तिकतानन।

ज्ञा॰ स्वा॰ १८

मरैजीव आपमेमानि जीवब्रह्मविभुमिमानमिलमईसरूपैहानि ५९ अज्ञान आवरनपर्यंके जुगजी
वहैताय सपनेमेंआवनमेंकुरसमझावेमोनि ६० चौपाय प्रथमएकअज्ञानहोईतीयेआवर्नोकहीपु
लाहिविहेपतानासरेपुनिपरोक्षसुषलोजे पंचमहैप्रतक्षछठेसोकहैनासा सप्तमसुषकोनासमाने
अंतरषलासा तीनअरधउरधचतुर्थमोहकोभेद लनाश्रमापतितेनासेसकलप्रषेदे ६१ कैसा
मासानुकारआलतवोनित्यमुकतिविमान बंधनभावविसपलाहेताकोकहे विधान ६२ कुबुधिकोमि
केषतमेअजनकरभ्रममानि दशमआपनरीतिनसकेनवककरिदुःषमानि ६३ चौपाय आवृतएक
सवारदषमक्षनकेधाये दशमअज्ञाननवमानिवातकहिकेसमझाये नवकोसंष्याकरैमानिदसआ
18 पैसोई औरकेकहेअनेकमेदरहतनिहचेहोई सुनिपरोक्षचितधारिकेदशमप्रवाणप्रतक्ष मेटिवि
परजयज्ञानलहिआत्मआपमलक्ष ६४ सोरठा सतगुरुमिलतअसवारशोकहताजनतालायेके मारेवि
परजयज्ञानसों तत्वज्ञानविस्तारलखोआतमासुधसो ६५ प्रथमपरोक्षदिषाय
बहुरकरेप्रतक्षहो परोक्षप्रतक्षममतायततलतततयेकहे ६६ परोक्षप्रतक्षविवाचितजेकेसुष
लषलहि गुरामरतभ्रमनासपुमानंदप्रापतिजेव ६७ यहाजीववाचिवहहसमकहेहिअ निस्मृति
प्रवान ज्ञानदृष्टिकरिजानीयेबरतलतनिदान ६८ अथलक्षणद्वलत्तेना तथाच सत्यज्ञानमनंत
ब्रह्मेतिश्रुतेः चौपई सत्यज्ञानअनंतहैब्रह्म अनंतकासविलासनिहत्रम निराविकारकूटस्थनि
रलेप लषारथलहोअसेप ६९ सतचितआनंदपूर्णबोध ज्ञानहोयसुषधामअसोध अगह १८
अगोचरअव्यक्तिरूप निराकारनिरवचनसरूप ७० तथाच निर्विकल्पमनंतचहेतुदृष्टांतव

स्ततहै त्रिपुटीयहकहदेव ४२ सोरठा चितअध्यात्मजानजीवदेवअधिदेवहै चितवनवि
षेप्रवानतीनयमिलकारेवरनितहै ४३ मनअध्यात्मजानचंद्रतत्रहेदेवता संकल्पविषेप्रवान
तीनयमिलअनुसतहै ४४ बुधिअध्यात्मजानब्रह्मदेवअधिदेवहै बोधविषेप्रवानत्रिपुटीप्र
प्रबंधहै ४५ अहंअध्यात्मजानरुद्रदेवअधिदेवहै अहंकृतिविषेप्रवानत्रिपुटीयहप्रवानि
है ४६ दोहा अध्यात्मइंद्रीसबनेविषेसकलअधिभूत देवसकलअधिदेवहैसमझतजेनवक
प ४७ रजगुनतेइंद्रीसबैसतगुनतेसबदेव तमगुनविषेप्रवानियेज्ञानहृदयलहिभेव ४८ जा
ग्रतकोवरननकियोस्थूलदेहविवहार नेत्रअस्थानरहिहोमजो विश्वअभिमानीधार ४९ अथसु
प्नअवस्थावरनन इहैमासमुनिलखअभेअहृदयप्राणमुखनाम फल्गुंथलगवायुसंगसबनामस्हम
वास ५० चोदहइंद्रीदेवसमअहतिवासवसकंठ साक्षीमैसहमफुरअभिमानीतैजसमठ ५१ अ
पनुषप्तअवरननेजाग्रतसुपनअभावजितनिद्राघोरसमाय जीवईसहैएकतानिज्ञानंदकारजाय
५२ सुखुपतिकारणदेहजोहिरदैमहिंउपवास प्राज्ञअभिमानसाक्षीफुरेआनंदभोगनिवास ५३
अध्यात्मअधिभूतजोअरुअधिदेवहैताय पंचकोसाअेअवस्थाजीवनाचेरहजोय ५४ इतिचव
वस्था तीनोगुनपुनआरहैजीवनाविप्रसंग सोअवयकहेवषानिकेसुनीयेतिनकेअंग ५५ हम
साधसाधहमसांतिहेदमयऽितहमतत्व हमहातनाहिमभक्तिजेसतगुनवाचिमहत्त ५६ हमक
रताहमभोगताबहुसपतिसुतनहार तपतीर्थहमगृहकरवाचिरजोगुनधार ५७ मोहनेजनम
मत्ताविषेनिद्राआलसक्रोध गुरुशास्त्रनास्तिकलषैतमगुननवाचिनिरोध ५८ मायाकृतसबध

ग्री. मै प्रहरण लक्षलक्ष्य ईश्वर को धरण जीवको चित्त निजत्याग ही करे लक्षलक्षण निश्चै धरे १२ कार्य
सा. कारण वाचि जु कहीये वाच्य त्याग के लक्ष हि लखीये लक्ष दुहू न की एक सरूपा सत चित आनंद
१९ परम अनूपा १३ जीव ईस माया जड नाही सदा निरंतर सो वरहाही अग्नि एक ज्यो ते मु पाई
दारु काष्ठ मे प्रकासक सोई १४ उपाधि भेद ते भेद लहीजे सुधि तत्व मय एक करीजे वहु तकी छमे
वहुती होई अल्प काष्ट मे अल्प सोई १५ तथाच एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरा
त्माधिमाध्यतः इति श्रुतेः यमाया ब्रह्मंड अनंता ब्रह्म ईस को भास लहंता पिंड अविद्या हो य तनक
19 सो जीव अल्प प्रकासत एउ सो १६ माया कलपित ईश्वर लहीये माया कलपित जीव सक होय जो
वह समाय नहीं जहा सदा निरंजन सो वह तहा १७ जैहा महाकास जप एक है घटमठ दो य रूपा
घटमठ सउ त्याग के महाकास सो साधि १८ तथाच यस्य भासा सर्वमिदं विभाति एवं सर्व प्रका
सक मूलश्रुति श्रुतेः चौपई कोटिक ब्रह्म अंड वन रि धरीया सब मे भास भान का परीया ऐसे माया व
धि संजोगा ईश्वर जीव भेद यह होगा १९ देस काल अरु वस्तु परछेद तीनो त्याग कहे ये वेद सो अयं स्वद
न घटत्ववाक्य निरूपित द्वैत तज्यो एकै सोय पदो दूपत तुहीं त्याग दोय २० चेतन एक सच्चिदानंद
है लक्षार्थ इह अमानंद है सोहं हंसो एक सरूप सो ही तुरीया परम अनूप २१ जैहा कहो लक्षण
भेद इह कार्य कारण वाधि परो उभय सो हीं लसो ज्ञान अखंड समाधि २२ शिष्य वचन जीवनमु
क्ति को भेद अब कहो गुरु समझाय समझे ते मे सो नसे त्रिविध ताप मिट जाय २३ अथ जीवनमुक्ति १९
लक्षणवरनन गुरु वचन स्वरूपाववोधो निकल्प सहित इति श्रुतेः वाच्य विकल्प नहीं सहस

त्वं

जितं अप्रमेयमनाद्यंतं ज्ञात्वा च परमं शिवं मुनिश्रुतेः ७१ दोहा ईस ईसता त्याग के जीव जीवता त्या
ग तत्व तततपद एक है ब्रह्म असीपद त्याग ७२ तथा च निर्गुणः सत्त्वोभूतः स्वतंत्रो निष्कलो निरंज
नो निरभिमान इति श्रुतेः वाच्य लक्षन वरनन कियो जीव ईस को भेद कहि समझाई लक्षन सो मा
ष नहि वेद ७३ इति श्रीरघुबरदास मनकथित तत्वज्ञान सागर तत्तपद त्वंपद वाचिलक्षन नाम अष्टमो
प्रसंगः ८ चौपाई शिष्यवचन हे गुरु भली कृपा तुम कीन्ही तातें परी ब्रह्मगति चीन्ही तत्वंपद को ६
सुनायो वाचिलक्षन निरनो समझायो १ पुनि कहु यापद ब्रह्म बखान्या साक्षीपद में नीके जान्या लक्ष
णा भेद कह्या पुनि आगे लक्ष्य ब्रह्म सोवत सो जागे २ गुरुवचन सोरठा त्रिविध लक्षना भेद कहे स
मजाऊं तोहि समझाय जहद अजहद बहुरि जहदाजहद श्रुती सरी ३ जहदलक्षना ऐही पिंड ब्रह्मांड स्वभाव
म जाऊं तो हि सम जहद ... अज्ञान पिछानी ये ४ चौपाई तामें मिलकर जीव अज्ञानी धारमांहि
सन नहि भोतिक कलप तेहि सम ... कर्मवासना उरमें ठाने ५ ईश्वरकारण अंतरजामी म
मिल्यो जिम पानी पाय अलपता सरूपन आने कर्मवासना उरमें ठाने ५ ईश्वरकारण अंतरजामी म
हतस्वतंत्र परणस्वामी अलप महत एकतानाहीं जहदलक्षणा छुटें दराही ६ दोहा जहदलक्षणा
सर्वथा त्याग न होय तिह मुक्ति कहें अनेतताम ७ सोरठा अजहदकरु
नाव गोजीव चिदानंद भासे सर्व थात्याग ... तिहमुक्ति कहें अनंततामसे ७ सोरठा अजहद करु
नावगो जीव चिदानंद भास सर्व थात्यागन होय तिह मुक्ति कहें अनंत ताम ७ सोरठा अजहदकरु
नावगो जीव चिदानंद भास कार्य कारण नाम तामें भेद न लखीये ८ जीव ईस न हो त्याग पिंड ब्रह्मांड
बषान व्यापक व्यापी ब्रह्म है कार्य कारण नाम तामें भेद न लखीये ८ जीव ईस न हो त्याग पिंड ब्रह्मांड
बषान व्यापक व्यापी ब्रह्म है ... त्याग अजहद यह मन जानीयें ९ दोहा कही लक्षना दोय यह जहद अजहद
न त्याग है वाच्य लक्षन नहीं त्याग अजहद यह मन जानीयें ९ दोहा कही लक्षना दोय यह जहद अजहद
बखान भाग त्याग बिभाग बिन आत्मज्ञान न जान १० चौपाई जहदाजहद और सुनि कहीये पिंड ब्रह्म
ड बिभाग हे लहीये सत्य असत्य बिचार मन धरीये असत्य रूप को त्याग जु करीये ११ ईश्वर वाचिस

ज्ञा॰ मरै ३९ तथाच श्रुत्मनि अवकाशीनासीतथा इव्यौ दिशाचो नरश्यानेतिश्रुतेः कार्यकारणसेद
सा॰ वाधि सरूपज्ञानकी प्राप्तसाधि सरूपज्ञानके विरोधनकाय अधिकरणतादि औरनहोय ४०दृ
२० ष्टांत जैसे अग्निकाष्टमेकहोये काष्टविरोधीताहिनहीलहोय विज्ञानरूपआत्मसनमाहि ज्ञान
अज्ञाननवाधेताहि ४१ ताहुकअग्निजुप्रगटेआय काष्टहीसहुकेरसनभाय जैसेकहीयेविद्या
ज्ञान ताहिअधिकरणअंतःमान ४२ विद्याअविद्याविरोधेहोय हाएहुथपरसपरजाय सरूप
ज्ञानमेंद्दकुनाही अधिष्टानसतकोसोआही ४३ सरूपअधिष्टानाहीकाय अविद्याविद्याप्रका
सीसाय जीवनमुक्तिसरूपसोकहोये तामेज्ञानअज्ञाननलहोये ४४ विद्याअविद्याविरोधनस।
रूपे ब्रह्मनामताहीतेरूपु ज्ञानअज्ञाननकहीयेतहां अंतःकरणनलहीयेतहां ४५ विद्याअविद्या
कोअधिकरण सोरियेकहेअंतःकरण अंतःकरणमेंप्रतिबिंबचेतन जीवनामताहीकोहैपुनि ४६ अं
तःकरणअज्ञानकोकार्य अज्ञानरूपअज्ञानोआर्य अपनेसरूपकोनयेअज्ञान ताकोचहीयेविद्या
ज्ञान ४७ सरूपतत्त्वनकीप्राप्तिकारण ज्ञानीगुरुकीसरनहीधारण अंतःकरणसुधजबहोई विद्या
ज्ञानलहेपुनिसोई ४८ अंतःकरणअरविद्याज्ञान सरूपमाहिनाहीतेजान अखंडाकारब्रह्महैसोय
नामरूपात्रिपुटीनहीहोय ४९ तोहात्रिपुटीब्रह्मसमाईयेज्ञाताज्ञानअरज्ञेय जलतरंगमदकुमंज
सर्वब्रह्मकरिलेय ५० तथाच सर्वंखल्विदंब्रह्मेतिश्रुतेः चिदाभासज्ञातासोवेदिव्यभासज्ञानहोहो
य ज्ञेयवस्तुतेमिथ्यनहिंत्रिधात्रिधाकरिजाय ५१ अंतःकरणउडीसभेपिंडब्रह्मंडहीजान सर्वब्रह्म २०
कोरलेपीयेतामेतत्त्वनमानि ५२ ज्ञानीअंतःकरणपुनिविद्यामैइकुभाव ब्रह्मअसीप्रपंचहेइज्ञो।

20

केऽज्ञान भवबोध प्रकास ज्ञानी जीवनमुक्तिमय सुखस्वरूप निरवास २४ ज्ञानी जीवनमुक्तिपद
कहन सुनन संदरि मनवाणी सपुरण न होऽबाधि रूप निरधारि २५ उपदेस्य गुरुघा स्वकरि
विधि निषेध विस्तारि सो सब जीवनमुक्ति में परमारथ न दृष्यारि २६ तथाच ननिरोधो न चोत्पत्तिर्न
बद्धो न च साधकः न मुमुक्षुर्न वै मुक्त इत्येषा परमार्थता: इति श्रुतेः ॥ तिनमा जीवनमुक्तिपद देह
मांहि विदेह तहां थिर भावल हि रवस्वरूप निरगेह २७ जीवनमुक्ति सु देह मे सरूप लक्षण धारि
वाचारण्य गुरा में स्तौ त्रिविध कहे निरधारि २८ तथाच तत्र यथा प्रारब्धकर्म वेगेन जीवनमुक्तो यद
भवेत् किंचित्कालमनारब्धकर्म बंधस्य संक्षये ३० उत्तमो निर्विकल्पस्थः संप्रज्ञातस्तु मध्यमः
कंथा तु लेऽधमः प्रोक्तो जीवन्मुक्त इति त्रिधा जीवन्मुक्तिः ३१ जीवनमुक्ति प्रभाव विन सर्व निषेध न
होय प्रज्ञिलहि प्राप्ति नहीं त्रिपुटी भेद समोय ३२ दृष्टांत मेरी जिको कहत है जिकाकरि जावत
होय प्रज्ञिलहि प्राप्ति नहीं विन जावत ३३ दृष्टांत निषेध भेद हो विन ही विन हे जीवनमुक्ति मु
जिक्त विन कहिं तान हीं सा केल ज्यावत ३४ तथाच अज्ञानजन बाधार्थ प्रारब्ध वक्ति श्रुतिः
क्रि जस जेमुक्ति के सो नाहीं संजुक्ति ३५ दृष्टांत
जीवनमुक्ति स्वाक कहि ताविन कहे नवोध्य परारब्ध निषेध जा स्व स्वरूप ते होय ३६ व
जो स्त्राका सब्रमाके स्वाकहितल निषेद तल मलिता कोई कंथा स्त्राका मन के धेमे ३७ दृष्टांत
धा गृहणा करी विना पुत्र निषेद्धता नाहि गृहणा करे विन सस्व केम्ह गनिषेध ता नाहि ३८ चोपई
तै सं जीवनमुक्ति विन सर्व भावन हो य भावअभावन सरूप मे मुक्ति मम नोय सोय
मध्यस्थ रूप ह जीवनमुक्ति अरसो परारब्ध संजुक्ति कर्म भोग विनदेह न रहे कर्म देह सरूपे न ही

ग्रं: ध्यानकरिगुरुकहतुहै मरीचकाजलभयेतैं नलबुधिनाहीरहतुहै पुनिजलसोभासैमासहुगनकीकोई
सा: तैं परिहरैप्रितभासअभावज्ञानतेजोरितै ४ बुद्धज्ञानभयेजाहिकामक्ष्याजरायभासहै नासोवि
२१ धनकरेसुदेषतहाअनियासहै चित्रसर्पसमसायकपुरुषाथैकछुनाहिरे परिहापरारब्धबिवहारस
हिजबरताहिरे ५ घटमठमृतिकामाहिकल्पनादिषीयै सबसामृतिकामानभेदनहीलेषीयै गजग
ब्रह्मसरूपअरिमध्यश्रुतहै परिहजीवनमुक्तिप्रभावकहतआतसतहै ६ कवित चिदाभासलीयेदे
हविवहारअहसमसुपनेतैंजागेजैसेसुपनादेषातहै इंद्रजालबाजीसमजानीयतदेषतसोसकलसुष
उतेअदेषऐसोविलातहै साक्षीकहस्थभावाभावकोप्रकासबुधजीवनमुक्तिआपाआपमेरहातहै जी
वनमुक्तिरूपगुणातीतसुधसोयचेतनअषंडएकरघुवरआपहै ७ मिथ्यवचनबोलासिध्यब्रह्म
ईसोकेसेकबुमकससंधारै कारणविनकार्यरहेसगुरुदेहुनिवार ८ चौपई कारणनासतैकार्यनहोइ
है मातकाविनघटकेसलहै अज्ञानकार्जसतनमनकर्म अज्ञानामिटेसमनासेधर्म ९ गुरुवचने
२१ रसब्बद्रश्यवसुनिवृतात कोहिसमकरकरिदृष्टांत रजुमेंअहिताभासजबही उरमेकंपचठतहैतव
ही १० रजुज्ञानकरिअहिनहीरहै परिकछुकेपाहिरदैमेंदहै अहिकारणतेकार्यकंप अहिताना सेक
पटेहैरुप ११ कारणिजयकार्यपभासै पुनिछिनछिननपोछेतनासै जीवनमुक्तिमेतनमनभास दुषसु
षभोगपसहिजहोयनास १२ मिज्ञानंदमयसहिजेरहै भुक्तभोगअपनहीकहै अज्ञाननीदतेजाग्यो
आप दुषसुषरहितपुननहीपाप १३ तथाच जेतेवाचाविवर्ततेअप्राप्यमनसासहइतिश्रुतिः अ
षंडसमाधिरहैअनुरागे जगतनासमिथ्याकारत्यागे परतेंपरअगमतेआगे निरवृतीनिरवाण २१
विभागे १४ विद्याअविद्यातहांनकोई साक्षीब्रह्मआपहैसोई उनमतरूपअषेआनंद परमजोति

मे रह्यो भास ५२ जंम अंगार हमकतर है श नैश नै है सांति महातेज मय लीन सो तहां न पाईये कांति
५३ द्राष्टांत तैसे जीवनमुक्ति के परार ह्यो विवहार विचार हम कस माय के सकल भये जंतु क्षार ५४ स्व
स्वरूप प्राप्ति विषे विद्या ज्ञान न साय ज्यूं सूरज मे तीजशीप ई एना हि सुभाय ५५ द्रष्टांत द्राष्टांत को आ
खित जे से सूरज मे वीजुरी नपाई यतु कार्ह विध अन्त्र जहां बीजरी अरु गाजहै सूरज प्रकास सातो एक
करि आनीयत अंत:करण विद्या मफुरणा राजे है जीवनमुक्ति तैसे अंत:करण ह्य अंत हकर णा विन
कल्पना विनास है सरूपमें न पाइये ते विद्या अविद्या को ह केवल विदे हरूप सहजनिवास है ५६ लेत
णा विदेह इह देह माहि निर्विकल्प सुषापति सम मनोई भाव रह जानीये अनन्तदशा रहि ई निर्विकल्प होय
तऊ आपनी विदेहता सो देह माहि मानीये मानकाल निर्विमबकल्पता सरूप आंदि देहपात न येनिर्वि
कल्पता पिछानीये देहपात नय मुक्ति मानत अज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी निर्विकल्प देह छूते ही उवानीये ५७ सो
रठा स्वस्वरूप निरधार निर्विकल्पा नि है कियो जीवनमुक्ति उदार तहि विसषता आपनी ५८ कवित
गयो विसषर जतु भावन है सो ऐसे सीपीसुध विसषप ज्यं आत्मता मानीये ५९ मुक्ति हामि थ्या नास रज
त तहां अकाल नहि रजुमें अहि तानास मिथ्या ही कल्पा जहा ६० चित्र ही सि य वना यता मे ना हि नसिय
ता इह सांम थ्या भावत्य जगजीवनमुक्ति मे ६१ नासा विरोधी नाहि मतीचित आनंद ब्रह्म है ससे को ना
हि परमानंद सो आत्मा ६२ इति श्री रघुवरदास कथित ज्ञानसागरे जीवनमुक्ति वरननो नाम नवमा
प्रसंग: ९ सिष्य वचन दोहा सिष्य कैमन संसे भयो जीवनमुक्ति को नाम ज्ञान भये छूटत न है सुपन न जा
गत तास १ पांम अज्ञान ते वार है पंच ज्ञान भयेनाहि आत्म अज्ञान प्रजगत मे ज्ञान भये तेनाहि २ हेत भेत
लीये ज्ञान को यह संसे गुरु माहि मोको उतर दीजीये मे सरणा गत तोहि ३ गुरु वचन चरित्र सिष्य को सन्ना

ज्ञा० तनदेग उमैहसप्रथीहेतेसंचिततक्रियानदेग ३० परारब्धसरवेगतनभुक्ताभोगप्रवान क्रियमान
सा० संचितकर्मैनयोअजानविनिदान ३१ विनकुलालफेरैचक्रजोजीवनमुक्तिसरीर हरिलउषरदेषीयेज्यं
२२ त्यूंसरितातीर ३२ चौपई जेकोउवीजनतककवोवे सोनहिफेरजोकदेनसेहोवे ज्ञानवंत तेकर्मप्रसंगा
असंगरूपसोमुक्तिअभंगा ३३ फटकसगरगबहुभोसे तैसेंज्ञानीतनमनवासे देहमांहिविदेहमुनिक
होय क्रियाकरैकरतानहीलहोय ३४ सोरठा अहंकारतनजेदेहसहजभायकर्मनकरै देहीमाहिविदेहवे
ष्टनमतवालज्यू ३५ जीवनमुक्तिप्रसंगसकलकह्योसमजायके जोसंसेकछुअंगवहरप्रश्नकरियसो
ये ३६ शिष्यवचन दोहा हेगुरुतुमरहस्यासेनष्टभयासंदेह सोज्ञातेकारअलक्षविसराहदेह
३७ चौपई संसेजलाधिरमोहितभारयो तत्वनौकारिहरदेविसार्यो परमानंदस्वरूपनिधपाई तातेसंसार
ज्ञानकाई ३८ उत्तरप्रश्नपरिश्रमकीना तुमाकरोगुरुप्रवीना सरूपज्ञानधनदायोचहो अवतुमभया
नयोआनंदा ३९ निजअनुभवप्रगटयोसौकहिहे संसैभ्रमहतकरसिरहे कोनधर्मकोधरथिकसदेव मोहको
मनाकहारहावे ४० प्रमाताप्रमाणनपरीये देताहेतमेहनदीलहीये निजरूपमंअस्थितअवभयो जे
तभीतिकसंसैसभगयो ४१ सततस्वरूपनिरवासभदाइ हेदृतीतअनभवनिरवाइ कहोसोकूकोनहे
ज्ञान वचन अतीतसनातनज्ञान ४२ कोनअविद्याविद्यातामे हेतामभतारहीनजोमे वेधनतीनहीने
दामेद निरविसयअघतअछेद ४३ स्थलकालननानअज्ञान कोनअनात्मआत्मठान जाग्रतसुपन
नसुषपतितुरीया शास्त्रउपदेसनगुरुसिष्यक्रिया ४४ परलमीपनअंतरवाहर सततमधतलनकोरोता
हर विभ्रमनतेजसप्राज्ञउपाधि साधवसाधननसमाधि ४५ दोहा हेद्रष्टासनभ्रष्टकोदरससनेत्र २२
तोन सोनेकलपतदेषोपसुक्तारजतकरिजान ४६ हंसमोधिअनन्तगतिजो क्वाहुरतामाहि उदेअस्थिरसु

22

परग सुषकेस। १५ सोरठा राज्ञभीषसमतुल्यों है परतर अकेभोग जाज्ञवल्क सुकदेव जैजनकराज संजो
ग १६ विज्ञान रूप रवि तेज तें पालोगालि अहंग्रंथ मिट्यत सर्वसंसयान अम जे पंक मेपंथ १७ तथाच छि
द्यंते हृदयग्रंथिश्छिद्यंते सर्वसंशयाः क्षीयंते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे तिश्रुतेः १८ ती न्याय
छिविदारि कै साक्षात कार निजरूप भेदभ्रम तातें न हो सुधा समुद्र अनूप १९ अथ बचन सोरठा सिष
संसे दूर अज्ञान ग्रंथ भेद फछन चढै गुरु के बचन संसै को जरनार है २० संसै ग्रंथ वरनन गुरु वचन
अरिल जीव सीव को एक कहत सम को यह जीव अल्पज्ञ ज्ञान सर्व सुख सो होय रे पुनि एकता कैहेमा
य को न से ज्ञान ते. परिहा गुरु शब्दन विश्वास सहस सो अज्ञानतें २१ कर्मग्रंथ वरनन कर्मग्रंथ पुण्य पा
प अल्प या व्यापक. वर्णाश्रम कर्म धारि सुभासुभ में यापक. संचित क्रियमाण प्रारब्ध हि भोग दे परिहा वहु
त भांति अभिमान कर्म करि जो गावै २२ अथ ग्रंथ वर्नन छप्पय अहंग्रंथ दरकाय मिट वहु भांति ही भारे
पडित भ्रम रख मानि राखैरक हि दृढ कारे साध वार अहंमानि जानि भोर हा दुख सुख अहंपंक बहु भांति ग
आरत लहत मन दुख विप्राक्षि को अहंग्रंथ पच्च भ्रम महा प्रेत प्रधान ब्रह्मभाव कर लिके लियो जीव जिरुमा
न २३ दोहा तिहि हित वङ्गत संतार को हि ज्ञान मनोकिम रुजोग श्रवन मनन निदिध्यासन करि साक्षात
कार तब होग २४ जीवनमुक्त सो साक्षात सो अनुभव गम्य उदार ज्ञान ज्ञाश्र विदरूप तें सि धारहा महै वे
धार २५ सर्व असंगो सर्वगति सत चित आनंद साय निरवचनी निर्वाण अज अमल समत न है हो
हाय २६ निर्विकल्प विज्ञानमय बोध अविद्या पार सम्म सी मिथ्यात्व है व्यापक सो समेद निवार २७ तन
मन इंद्री प्राण सम परारब्ध के संग देवाधीन वर्ततसवैत. अनवद्य असंग २८ संचित कर्म भंडार ज्ञ
क्रियमान परिहान ज्ञान अग्नि करि जारि गये परारब्ध प्रवान २९ छुटि चित्ते सो तीर ज्युं परारब्ध

ज्ञा॰ भावतैचिंतवातभ्रमाहि ४७ चिंतवानघुमिसांतिकरि जीवतहिरमैलीन चिदानंदसागरअचल
सा॰ हाणनृभ्रममहीन ४८ गुरुवचन स्वस्वरूपअनभवलसोमिथ्यामुक्तिगुरुदेव आसिक्तआतमता
२२ नकोबहुत्योकरतअसेष ४९ सोरठा हीसिष्यअपनोरूपलष्यभलीविधज्ञानिके सुषसागरमें
पअरहतचुपचेतनपद ५० अवरजेलहिरआनेरसभुरूपसमतेपरे विचरौतेनिरसंगबुरहे
ष्मसनज्ञानिके ५१ छंदनबापेकोयहताममतारागजे ओघदअनुभवसोपगुरुगमतानअनूपहै
23 ५२ कवित ग्रंथकीजुगतिजोरिरीतिरीतिकरिकारि ओघदअनूपइहहतरीयधारीये अनसमरोग
हीयतीनतापतवेकोयसतगुरुवेदपायजुगतिविचारीये साधनेचतुष्टहोयअधासोदेअनुपान
प्रीतरीतिमनलायसमाधानपारीये ससेविपरीतजायआनंदघनकासमायरघुवरदासभइहनिरध्या
ससारीये ५३ दोहा साहातनकाराचिस्तानघनतामेकरिविश्राम चिन्हदीपसमलीनसोप्राप्तपराकी
म ५४ गुरुसिष्यकासंवादइहसागरज्ञानअनूप सोरठाचौपईकवितछंददोहादीपसरूप ५५
अर्थहीपरमअनुनालहैजनमुरजीवेभेद विपतअविद्यानासतबजीवजुब्रह्मनरेस ५६ भाषा
अनूपमग्रथइहश्रुतिस्मृतिप्रवान निजअनुभवगुरुमयातेरघुबरदासबषान ५७ जेअभि
मानीकुटिलसठभावहीनकामिष्ट लोभीलंपटनासिकीतेपरइगर्थनदृष्ट ५८ भाषाग्रंथबना
वइहकीन्हेजुगतिविचारि अर्थविपरजयकटित्त छंदसंतोलेहुसवारि ५९ संवतअठारसैइ
कावनाकार्तिकमाससनिवार कृष्णपक्षत्रितीयाविषैग्रंथसंपूर्णभार ६० इतिश्रीरघुबरदास २२
नकथितेज्ञानसागरेअद्वैतसिद्धांतवर्ननोनामदशमोप्रसंगः १० इतिज्ञानसागरग्रंथसंपूर्णम्॥

संवत

Acc-120